www.thesundayviews.com | www.indiaexpressnews.com | twitter.com/sundayviews

राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र

RNI-UPHIN/2014/58463

द संडे व्यूज़

वर्ष : 11 अंक : 23 लखनऊ, रविवार, 19 जनवरी, 2025 पृष्ठ : 08 मूल्य : 1/-

लखनऊ से प्रकाशित

मिल्कीपुर उपचुनाव

सूरमाओं की साख दांव पर

कुंदरकी की जीत के बाद अब भाजपा का पूरा फोकस मिल्कीपुर विधानसभा सीट को लेकर है। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में यहां से सपा के अवधेश प्रसाद निर्वाचित हुये थे, तब उन्होंने भाजपा को शिकस्त दी थी...

योगेश श्रीवास्तव

लखनऊ। अयोध्या की मिल्कीपुर विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव में पार्टी और प्रत्याशियों से ज्यादा दो सूरमाओं की प्रतिष्ठा दांव पर है। नवंबर में नौ सीटों पर हुये उपचुनावों की अपेक्षा मिल्कीपुर सीट का उपचुनाव मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सपा के अध्यक्ष अखिलेश यादव के लिये नाक का सवाल बना हुआ है। लोकसभा चुनाव में मिली शर्मनाक हार की भरपाई सत्तारूढ़ भाजपा ने कुछ हद तक विधानसभा की नौ सीटों पर हुये उपचुनाव में पूरी की। रही-सही कसर पर वह मिल्कीपुर सीट जीतकर कर लेना चाहती है। मिल्कीपुर सीट इसलिये भी भाजपा के लिये खासी महत्वपूर्ण है क्योंकि अयोध्या में राम मंदिर निर्माण होने के बाद हुये लोकसभा चुनाव में वहां सपा को मिली जीत ने लखनऊ से दिल्ली तक भाजपा को असहज कर दिया।

अयोध्या जहां भाजपा का वर्चस्व माना जाता है वहां पर सपा ने जीत दर्ज कराकर लोगों के इस मिथक को तोड़ा है कि भाजपा को मिली अब तक की जीत में हिन्दुत्व व मंदिर मुद्दा अहम् है। कुंदरकी की जीत के बाद अब भाजपा का पूरा फोकस मिल्कीपुर विधानसभा सीट को लेकर है। वर्ष 2022 के विधानसभा चुनाव में यहां से सपा के अवधेश प्रसाद निर्वाचित हुये थे, तब उन्होंने भाजपा को शिकस्त दी थी। इस बार सपा ने यहां अवधेश प्रसाद के पुत्र अजीत प्रसाद को मैदान में उतारा है। उनकी उम्मीदवारी की घोषणा पहले हो गयी थी भाजपा ने मकर संक्रांति के मौके पर चन्द्रभानु पासवान को उम्मीदवार बनाया है। सपा और भाजपा दोनों ही दलों के प्रत्याशी पासी बिरादरी के है।

कांग्रेस और बसपा यहां मैदान में नहीं है। सांसद चन्द्रशेखर की पाार्टी ने यहां सपा के पूर्व नेता सूरज चौधरी को अपना उम्मीदवार बनाया है। मिल्कीपुर विधानसभा सीट से भाजपा तीसरी बार जीत के लिये जोर- आजमाश करेगी। इस उपचुनाव से पूर्व यहां भाकपा के अलावा सपा,भाजपा, बसपा कांग्रेस, सभी को मौका मिल चुका है। यहां पर सीपीआई और सपा चार- चार बार, दो बार भाजपा और बसपा ने एक-एक बार और कांग्रेस ने जीत दर्ज करायी है। वर्ष 2007 के विधानसभा चुनाव में यहां से जीते आनंद सेन मायावती सरकार में राज्यमंत्री बने थे। परिसीमन के बाद मिल्कीपुर अनुसूचित जाति के लिये रिजर्व हो गयी तो सपा ने सोहावल विधानसभा क्षेत्र से कई बार विधायक रहे पूर्व मंत्री अवधेश प्रसाद को यहां से मैदान में उतारा था। वर्ष 2022 में यहां से विधायक बने अवधेश प्रसाद को इसी सीट से वर्ष 2017 के चुनाव में भाजपा के गोरखनाथ चुनाव हारे। इस बार के उपचुनाव में सपा यहां पीडीए, पिछड़ा, दलित, अल्पसंख्यक का फार्मूला अप्लाई करने जा रही है।

कुंदरकी जीत कर भाजपा ने चौंकाया

पिछले नौ सीटों पर हुये उपचुनावों में सात सीटों भाजपा ने जीती थी। इन सात सीटों में सबसे ज्यादा चौंकाने वाला परिणाम कुंदरकी का था। मुस्लिम बाहुल्य विधानसभा क्षेत्र होने के बाद भाजपा ने यहां जीत ही नहीं दर्ज करायी बल्कि सपा उम्मीदवार की जमानत जब्त करा दी थी। कुंदरकी की जीत भाजपा के लिये अप्रत्याशित थी। कुंदरकी को सपा का गढ़ माना जाता था लेकिन इस मिथक को उपचुनाव में भाजपा ने झुठला दिया था। वहां पर भाजपा की जीत पर सपा के नेताओं ने भी सवाल उठाये थे कि क्षेत्र 65 फीसदी मुस्लिम होने के बाद भाजपा को जीत कैसे मिली?

चुनाव प्रचार में जुटेगा सपा नेतृत्व

मिल्कीपुर सीट बचाने के साथ भाजपा की गढ़ रही अयोध्या में उसे एक बार फिर नीचा दिखाने की गरज से सपा कोई कसर नहीं छोड़ रही है। उम्मीदवार अजीत प्रसाद की जीत सुनिश्चित कराने के लिये पार्टी अध्यक्ष अखिलेश यादव के अलावा शिवपाल यादव, सांसद डिपंल यादव के अलावा सांसद जया बच्चन, विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष माता प्रसाद पांडेय सहित कई अन्य वरिष्ठ नेता प्रचार के लिये जायेंगे। यह पहला उपचुनाव होगा जहां सपा का हर छोटा बड़ा नेता अपने प्रत्याशी की जीत के लिये साईकिल दौड़ायेगा।

विचार आपके, रखेंगे दमदार तरीके से

यदि आप समाज में कुछ बदलाव चाहते हैं, दो दफ्तरों में आपका शोषण होता है, स्कूलों में हो रही मनमानी से आहत हैं, तो अपने विचार को मुझसे साझा करें। नाम, पता गोपनीय रखा जाएगा। कृपया इस मेल पर अपनी बात रखें

email:-sanjaysrivastava.ss26@gmail.com Mob.: 8317011531

संपादकीय

सांस्कृतिक समागम का शिखर, परंपरा धर्म और दर्शन का प्रतीक महाकुंभ

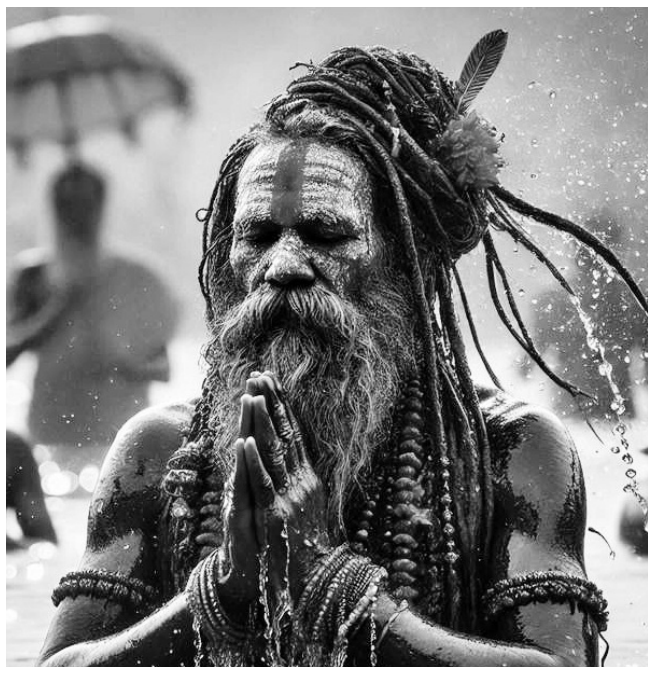

कुछ इतिहासकारों का मत है कि कुंभ मेला सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने सम्राट हर्षवर्धन के शासन में संपन्न कुंभ मेले का वर्णन किया है। कुंभ मेलों में शास्त्रार्थ होते थे। आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों पर चर्चा होती थी। शंकराचार्य ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया था। कुंभ सारी दुनिया को विश्व बंधुत्व लोककल्याण एवं विश्व शांति का संदेश दे रहा है। महाकुंभ अंतरराष्ट्रीय चर्चा का विषय है। प्रयागराज में विश्व का सबसे बड़ा मेला सजा है। लाखों श्रद्धालु कड़ाके की ठंड के बावजूद कुंभ का आनंद ले रहे हैं। महाकुंभ देश-विदेश के अनगिनत श्रद्धालुओं की जिज्ञासा है। भारत का चित्त और विवेक सनातन धर्म से प्रेरित है। इसी धर्म से संचालित भारतीय संस्कृति हजारों वर्ष के अनुभवों का परिणाम है। संस्कृति और परंपरा अंधविश्वास नहीं हैं। ये विशेष प्रकार के इतिहास हैं। इतिहास में शुभ और अशुभ साथ-साथ चलते हैं। शुभ को राष्ट्रजीवन से जोड़ना और लगातार संस्कारित करना संस्कृति है। राष्ट्र जीवन में बहुत कुछ करणीय है और बहुत कुछ अकरणीय। यहां धर्म, दर्शन, संस्कृति, परंपरा और आस्था राष्ट्र जीवन के नियामक तत्व हैं। ये पांच तत्व राष्ट्र जीवन को ध्येय और शक्ति देते हैं। कुंभ मेला इन्हीं पांचों तत्वों की अभिव्यक्ति है। लाखों श्रद्धालुओं का बिना किसी निमंत्रण प्रयाग पहुंचना आश्चर्य पैदा करता है। करोड़ों लोग आस्थावश आये हैं। तमाम जिज्ञासावश आये हैं और लाखों आश्चर्यवश....

महाकुंभ समागम संस्कृति प्रेमियों का महाउल्लास है। पंडित जवाहरलाल नेहरू भी कुंभ पर आश्चर्यचकित थे। उन्होंने 'डिस्कवरी आफ इंडिया' में लिखा, 'वास्तव में यह समग्र भारत था। कैसा आश्चर्यजनक विश्वास, जो हजारों वर्ष से इनके पूर्वजों को देश के कोने-कोने से खींच लाता है।' कुंभ स्थल प्रयाग संगम की भूमि भी है। संगम का अर्थ है मिलना। प्रयाग तीन नदियों का संगम है। यह यज्ञ, साधना, योग और आत्मदर्शन का पुण्य क्षेत्र रहा है। यहां गंगा, यमुना और सरस्वती नदियां गले मिलती हैं। ऋग्वेद के ऋषि 'इमे गंगे यमुने सरस्वती..' गाकर स्तुति करते हैं। कुछ लिबरल छद्म सेक्युलर सरस्वती को स्वीकार नहीं करते। सरस्वती का अस्तित्व सिद्ध हो चुका है। ऋग्वेद में सरस्वती को नदीतमा कहा गया है। तीनों संगम में मिलती हैं। तब तप, यज्ञ और योग की तपोभूमि प्रयाग हो जाती है और प्रयाग हो जाता है तीर्थराज। प्रयाग सामान्य नगर क्षेत्र नहीं है। सरकारें खूबसूरत नगर बना सकती हैं, लेकिन प्रयाग जैसा तीर्थ कोई भी सत्ता नहीं बना सकती। प्रयाग जैसे तीर्थ हजारों वर्ष की तप साधना में विकसित होते हैं। गजब की है यह पुण्यभूमि। पाणिनि ने यहीं पर अष्टाध्यायी लिखी थी। इंडोनेशिया के प्रसिद्ध ग्रंथ 'ककविन' में भी प्रयाग कुंभ की महिमा है। तुलसीदास इसे, 'क्षेत्र अगम गढ़, गाढ़ सुहावा' कहकर काल का वर्णन करते हैं। मार्क ट्वेन ने 1895 का कुंभ देखकर लिखा था, 'आश्चर्यजनक श्रद्धा की शक्ति ने वृद्धों, कमजोरों, युवकों को असुविधाजनक यात्रा में खींचा, इसका कारण क्या है? क्या प्रेम है या कोई भय? मैं नहीं जानता। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। यह अकल्पनीय है। सुंदरतम है।' वायसराय लिनलिथगो ने 1942 का विशाल कुंभ समागम देखते हुये पंडित मदनमोहन मालवीय से पूछा कि इतने लोगों को निमंत्रित करने में बड़ा धन और श्रम लगा होगा। मालवीय जी ने उन्हें बताया कि सिर्फ दो पैसे का पंचांग देखकर ही यहां लाखों लोग आये हैं।

कुंभ आस्था है। सांस्कृतिक प्रतीक है। वेदों, उपनिषदों और पुराणों में भी इसका उल्लेख है। सूर्य की 12 राशियों में एक राशि का नाम कुंभ है। मांगलिक कार्यों एवं तप साधना के दौरान सर्वप्रथम कुंभ कलश की स्थापना होती है। पुराणों के अनुसार कलश के मुख में विष्णु हैं। ग्रीवा में रुद्र और मूल में ब्रह्मा हैं। सप्तसिंधु, सप्तद्वीप ग्रह, नक्षत्र और संपूर्ण ज्ञान भी कुंभ कलश में है। पौराणिक आख्यान के अनुसार एक समय सागर मंथन हुआ था। मंथन से प्राप्त विष महादेव शंकर पी गये, लेकिन मंथन से निकले अमृत कुंभ पर युद्ध हो गया। स्कंद पुराण के अनुसार अमृत घट चार जगह हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में गोदावरी के तट पर गिरा था। इन्हीं चार स्थानों पर कुंभ के आयोजन होते हैं। अमृत मिले तो अनंतकाल का जीवन। विश्व के किसी भी विद्वान ने अमृत की चर्चा नहीं की थी, केवल भारतीय दृष्टि में ही अमृत की प्यास है। अमृत की प्रीति भी अमृत है। सूर्य अमर हैं। उगते हैं। अस्त होते हैं। मास, वर्ष, युग बीतते हैं। नदियां प्रवाहमान रहती हैं। कुंभ मेले में सहस्त्रों साधु, योगी और मंत्रवेत्ता आये हैं। उनके चित्त में घर-गृहस्थी की चिंता नहीं है, लेकिन लाखों गृहस्थ भी समागम में हैं। सबका विश्वास है कि कुंभ में स्नान और पुष्पार्चन जीवन को सुंदर और समृद्ध बनायेगा।

संस्कृति ही प्रत्येक देश की साधना, उपासना और कर्म को गति देती है। संस्कृतियों की भिन्नता प्रत्येक राष्ट्र की पहचान होती है। डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल ने लिखा है, 'भारत में अध्यात्म को, यूनान में सौंदर्य तत्व को, रोम में न्याय और दंड व्यवस्था को, चीन में विराट जीवन के आधारभूत नियमों को, ईरान ने सत् और असत् के द्वंद्व को, मिस्र में भौतिक जीवन की व्यवस्था और संस्कार को और सुमेर जातियों ने दैवीय दंड विधान को अपनी दृष्टि से आदर्श रूप में स्वीकार किया है और उनकी प्रेरणा से संस्कृति का विकास किया है।' भारतीय संस्कृति और परंपरा में प्रतीक गढ़ने और प्रतीकों को लोकप्रिय बनाने की अद्भुत क्षमता है। संस्कृति, परंपरा, धर्म और दर्शन का प्रतीक है कुंभ। ऐसे प्रतीक अल्प समय में नहीं बनते। ओउम् संपूर्णता का प्रतीक है। स्वास्तिक प्रतीक भी लोकप्रिय है। मूर्तियां और मंदिर भी ऐसे ही प्रतीक हैं। कुछ इतिहासकारों का मत है कि कुंभ मेला सिंधु घाटी सभ्यता से भी पुराना है। चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने सम्राट हर्षवर्धन के शासन में संपन्न कुंभ मेले का वर्णन किया है। कुंभ मेलों में शास्त्रार्थ होते थे। आध्यात्मिक दार्शनिक विषयों पर चर्चा होती थी। शंकराचार्य ने इस परंपरा को आगे बढ़ाया था। कुंभ सारी दुनिया को विश्व बंधुत्व, लोककल्याण एवं विश्व शांति का संदेश दे रहा है। मेले का संदेश सुस्पष्ट है। धर्म, परंपरा, संस्कृति, दर्शन और आस्था के संरक्षण संवर्धन के लिये हम भारत के लोगों को अतिरिक्त श्रम करना चाहिये।

बस्तर में नश्तर

पत्रकार की निर्मम हत्या से उपजे सवाल

नई दिल्ली। छत्तीसगढ़ के माओवादी हिंसा से ग्रस्त बस्तर के इलाके में पत्रकारिता करना तलवार की धार पर चलने जैसा ही है क्योंकि उन्हें न केवल माओवादियों व पुलिस प्रशासन के कोप का भाजन बनना पड़ता है, बल्कि अपराधी, राजनेताओं व ठेकेदारों की हिंसा का भी शिकार होना पड़ता है। इसी कड़ी में टीवी पत्रकार मुकेश चंद्राकर की क्रूरता से हत्या करने और शव को सेप्टिक टैंक में डालने की वीभत्स घटना सामने आयी। हत्या की वजह मुकेश द्वारा माओवादी इलाके में एक सड़क निर्माण में धांधली उजागर करना बताया गया है। खबर बीते साल दिल्ली के एक बड़े चैनल से प्रसारित हुयी थी, जिसके बाद राज्य सरकार ने इस मामले में जांच बैठायी थी। मुकेश की हत्या नये साल के पहले दिन की गयी और तीन जनवरी को ठेकेदार द्वारा बनाये घरों के पुराने सेप्टिक टैंक से मुकेश का शव बरामद किया गया। बाद में मुख्य आरोपी सुरेश चंद्राकर को हैदराबाद से गिरफ्तार किया गया। दरअसल, ठेकेदार से राजनेता बने सुरेश चंद्राकर कांग्रेस के एक प्रकोष्ठ में राज्य स्तरीय पदाधिकारी रहे हैं। कहते हैं कि पिछले महाराष्ट्र चुनाव में वे एक विधानसभा के पर्यवेक्षक भी रहे हैं। जिसके चलते इस मुद्दे पर जमकर राजनीति हुयी। एक ओर बीजेपी ने हत्यारे पर कांग्रेस पार्टी से जुड़े होने का आरोप लगाया तो कांग्रेस ने राज्य में बिगड़ती कानून व्यवस्था का मुद्दा उठाया। इस मुद्दे पर दोनों तरफ से खूब बयानबाजी हुयी। लेकिन इसके बावजूद एक हकीकत यह है कि पत्रकारों को केवल माओवादियों व सुरक्षाबलों के गुस्से का ही शिकार नहीं होना पड़ता, उन्हें ठेकेदारों,

राजनेताओं व अन्य अपराधी तत्वों की हिंसा का भी शिकार होना पड़ता है। उन्हें निर्भीक पत्रकारिता की कीमत जान देकर चुकानी पड़ती है। कहने को तो मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय कह रहे हैं कि वे स्थिति से परिचित हैं और पत्रकारों के साथ खड़े हैं। लेकिन व्यवहार में पत्रकारों की सुरक्षा राम भरोसे ही है। उल्लेखनीय है कि ठेकेदार की क्रूरता का शिकार हुए मुकेश को पहले माओवादियों ने पुलिस- सरकार का आदमी बताकर धमकाया था। परिजनों का आरोप है कि माओवादियों की धमकी भरी चिट्ठी से पहले सुरक्षा बलों ने मुकेश समेत कुछ अन्य पत्रकारों पर बंदूक तानकर धमकाया था, जिसकी रिपोर्ट भी मुकेश ने बनायी थी। इससे कुछ माह पूर्व बीजापुर के एसडीएम ने मुकेश समेत कुछ पत्रकारों को माओवादी हिंसा की खबर प्रकाशित करने पर नोटिस देकर जवाब मांगा था। वहीं बीजापुर में कांग्रेस अध्यक्ष ने खबरों में पक्षपात के आरोप लगाकर मुकेश समेत कुछ पत्रकारों का बहिष्कार पत्र जारी किया था। घटनाक्रम का दुखद पहलू यह है कि मुकेश की हत्या माओवादियों, सुरक्षा बल या किसी राजनीतिक दल ने नहीं बल्कि एक ऐसे भ्रष्ट ठेकेदार ने की है, जो मुकेश का रिश्तेदार भी था। निश्चय ही यह घटना अन्य पत्रकारों के लिये लगातार असुरक्षित होते हालात की तरफ भी इशारा करती है। कुछ साल पहले बीजापुर में पत्रकार साईं रेड्डी की हत्या कर दी गयी थी। जिसे पहले पुलिस ने छत्तीसगढ़ जन सुरक्षा कानून में जेल भेज दिया था और बाद में माओवादियों ने उसकी हत्या कर दी थी। बाद में पत्रकारों के आंदोलन के बाद माओवादियों ने खेद जताया कि यह शीर्ष नेतृत्व का फैसला नहीं था। निचले कैडर की लापरवाही से उनकी हत्या हुयी। इससे पहले माओवादियों ने उन पर पुलिस का मुखबिर होने का आरोप लगाकर उनके घर तक को बम से उड़ा दिया था। दरअसल, मुकेश चंद्राकर एक निर्भीक पत्रकार थे। वे न केवल एनडीटीवी के लिये काम करते थे बल्कि यू-ट्यूब पर 'बस्तर जंक्शन' के नाम से एक लोकप्रिय चैनल भी चलाते थे। जिसमें वे बस्तर की दबी-छिपी खबरों को प्रसारित करते रहते थे। उल्लेखनीय है कि सुकमा के पत्रकार नेमीचंद की भी माओवादियों ने पुलिस की मदद करने वाला बताकर हत्या कर दी थी। बहरहाल, बस्तर के पत्रकार चौतरफा हमलों के निशाने पर हैं जबकि उनके संस्थानों से उन्हें पर्याप्त पैसा व सुरक्षा तक नहीं मिलती। माओवादियों, पुलिस व प्रशासन के नजले का शिकार होते पत्रकारों की सुरक्षा के लिये बना कानून भी निष्प्रभावी नजर आ रहा है। अब राज्य सरकार विधानसभा में पत्रकार सुरक्षा कानून पेश करने की बात कर रही है।

सुलझाना होगा एमएसपी का सवाल, दूर करना होगा किसानों का असंतोष

नई दिल्ली। किसानों के असंतोष को दूर करने के लिये सरकार के लिये कुछ नये उपाय करने आवश्यक हो गये हैं। न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी का सवाल सुलझाना होगा। कृषि पर संसदीय मामलों की कमेटी ने भी एमएसपी की कानूनी गारंटी की सिफारिश की है। कृषि संकट एक वैश्विक घटना है। कई देशों में किसानों को संसाधनों तक पहुंच की कमी जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। पिछले दिनों उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने केंद्रीय कृषि मंत्री की उपस्थिति में पीएम किसान सम्मान निधि में बदलाव के साथ किसानों की समस्याओं के समाधान के लिये उनसे वार्ता की भी जरूरत जतायी। कृषि पर संसदीय मामलों की कमेटी ने भी न्यूनतम समर्थन मूल्य यानी एमएसपी की कानूनी गारंटी की सिफारिश की है। संसद के पटल पर रखी गयी इस रपट में पीएम किसान सम्मान राशि को भी 6,000 से 12,000 रुपये करने की भी संस्तुति है। इसी बीच अपनी मांगों को लेकर आमरण अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल के गिरते हुये स्वास्थ्य के कारण सरकारों की चिंता बढ़ रही है। 2020 में मोदी सरकार द्वारा तीन कृषि कानून लाने और फिर इन्हें खत्म करने के बाद भी किसान आंदोलन खत्म होने का नाम नहीं ले रहा है।

कृषि उत्पादन व्यापार एवं वाणिज्य (संवर्धन एवं सुविधा) कानून के अनुसार किसान मनचाही जगह पर अपनी फसल बेच सकते थे। कोई भी लाइसेंस धारक व्यापारी किसानों से सहमत कीमतों पर उपज खरीद सकता था। कृषि उत्पादकों का यह व्यापार राज्य सरकारों द्वारा लगाये गये मंडी कर से मुक्त किया गया था। किसान (सशक्तीकरण एवं संरक्षण)

मूल्य आश्वासन एवं कृषि सेवा कानून किसानों से अनुबंध खेती करने और अपनी उपज का स्वतंत्र रूप से विपणन करने की अनुमति देने के लिये था। इसके तहत फसल खराब होने पर नुकसान की भरपाई किसानों को नहीं, बल्कि एग्रीमेंट करने वाले पक्ष या कंपनियों द्वारा की जाती।

आवश्यक वस्तु संशोधन कानून के तहत असाधारण स्थितियों को छोड़कर व्यापार के लिये खाद्यान्न, दाल, खाद्य तेल और प्याज जैसी वस्तुओं से स्टाक सीमा हटा ली गयी थी। कृषि कानूनों से किसानों में यह बात घर कर गयी कि इनके जरिये सरकार एमएसपी को खत्म कर देगी और उन्हें उद्योगपतियों का मोहताज बनाकर छोड़ देगी, जबकि सरकार का तर्क था कि इन कानूनों के जरिये कृषि क्षेत्र में नये निवेश के अवसर पैदा होंगे और किसानों की आमदनी बढ़ेगी। कृषि संकट एक वैश्विक घटना है। कई देशों में छोटे किसानों को संसाधनों तक पहुंच की कमी, कम पैदावार, अस्थिर बाजार जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। भारत में इस कृषि संकट के चलते किसानों की आत्महत्या की घटनाएं 1970 से ही प्रारंभ हो गयी थीं। राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड ब्यूरो के अनुसार 1995 से 2014 के बीच 2,96,438 किसानों ने आत्महत्या की। 2014 से 2022 के बीच नौ वर्षों में यह संख्या 10,047 थी। नाबार्ड के अनुसार मौजूदा समय देश के सभी तरह के बैंकों का करीब 16 करोड़ किसानों पर 21 लाख करोड़ रुपये का कर्ज है। यानी प्रति किसान कर्ज 1.35 लाख रुपये है। आर्थिक सहयोग एवं विकास संगठन के अनुसार किसानों को जरूरी दर से कम एमएसपी देने से किसानों को लगभग 60 लाख करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। इसके चलते किसान कर्ज में डूब गये हैं। यह किसानों की आत्महत्या का एक बड़ा कारण है। इसी असंतोष के चलते 2020 में किसानों ने राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरू कर दिया। प्रधानमंत्री ने तीनों कृषि कानूनों को निरस्त करने के साथ किसानों की मांगों पर सहमति बनाने के लिये एक कमेटी बनाने की बात कही। कई दौर की मीटिंग के बाद भी आज तक उस कमेटी की रिपोर्ट का अता-पता नहीं है। अलबत्ता सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित पांच सदस्यीय कमेटी के कुछ निष्कर्ष अवश्य प्रकाश में आये हैं, जिसके अनुसार किसानों की लागत और कृषि हेतु लिये गये कर्ज का बोझ बढ़ रहा है। समिति ने उन्हें इस संकट से मुक्ति दिलाने के लिये एमएसपी को कानूनी मान्यता सहित 11 मुद्दे चिह्नित किये हैं। हाल में कृषि उत्पादकता में गिरावट, बढ़ती कृषि लागत, अपर्याप्त मार्केटिंग सिस्टम और सिकुड़ते कृषि रोजगार से कृषि आय में गिरावट आयी है। घटता जलस्तर, बार-बार सूखा पड़ना, कुछ क्षेत्रों में अत्यधिक वर्षा का पैटर्न, भीषण गर्मी आदि जलवायु आपदाएं भी कृषि एवं खाद्य सुरक्षा को प्रभावित कर रही हैं। किसान अपनी आजीविका को बनाये रखने से संबंधित चुनौतियों से जूझ रहे हैं। इसी आर्थिक असुरक्षा के चलते पंजाब के किसान संगठनों ने स्वामीनाथन फार्मूले के अनुसार सभी फसलों पर एमएसपी के कानूनी अधिकार की मांग की है। उनका कहना है कि उन्हें बाजार की ताकतों के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता। एमएसपी को महत्वपूर्ण कृषि उत्पादों के लिये मूल्य स्थिरता बनाये रखने के लिये डिजाइन किया गया है। इसका उद्देश्य सरकारी हस्तक्षेप के माध्यम से किसानों को मूल्य में उतार-चढ़ाव से बचाना है। यह प्रणाली पांच दशकों से अधिक समय से चल रही है। सरकार की धारणा है कि एमएसपी को कानूनी गारंटी देने से उसे सभी कृषि उपज खरीदने के लिये बाध्य होना पड़ेगा, लेकिन इस संदर्भ में दो महत्वपूर्ण पहलू हैं। पहला, सभी कृषि उपज बाजार में नहीं आतीं। किसान कुछ उपज को स्वयं के उपभोग, बीज और पशु चारे के लिये बचाकर रखते हैं। दूसरा, सरकारी हस्तक्षेप, केवल तभी तक आवश्यक होता है, जब किसी वस्तु का बाजार मूल्य एमएसपी से नीचे जाता है। इसीलिये एमएसपी पर कानूनी गारंटी लागू करने पर विचार होना चाहिये। एमएसपी की गारंटी न केवल किसानों की आत्महत्या को रोकने और महंगाई घटाने में सहायक होगी, बल्कि जल संरक्षण, सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा और राष्ट्रीय संपत्ति को संरक्षित करने में भी मददगार होगी।

मार्च तक हाउस टैक्स जमा करें

भईया हाऊस टैक्स जमा कर दो वर्ना नगर निगम करेगी सीलिंग व कुर्की की कार्यवाही...

ब्यूरो, लखनऊ। राजधानी वालों हो जाओ सावधान! नगर निगम अब एक्शन मोड में आ गया है क्योंकि शहर में 81 ऐसे बड़े बकाएदार हैं, जिन्होंने एक करोड़ से अधिक का हाउस टैक्स नहीं जमा किया है। इसी तरह, 50 लाख रुपये से अधिक टैक्स जमा करने वाले 139 बकायेदार हैं। 50 हजार रुपये से अधिक के 26,300 बकायेदार हैं। इसलिये अपना हाउस टैक्स नगर निगम की वेबसाईट lmc.up.nic.in पर जमाकर सुकून की नींद सोयें,वर्ना अधिकारी करेंगे आपकी सीलिंग व कुर्की की कार्रवाई। आखिरी मौका सिर्फ और सिर्फ मार्च तक का दिया गया है।

गृहकर जमा नहीं करने वालों पर अब नगर निगम सख्ती करेगा। मार्च तक जमा न करने पर बकाया गृहकर पर 12 प्रतिशत वसूला जायेगा। आवश्यकतानुसार सीज करने, सीलिंग व कुर्की की कार्रवाई भी होगी। शहर में सात लाख से अधिक प्रॉपर्टी हैं, जिसमें बकायेदार व्यावसायिक प्रॉपर्टी भी हैं, जिन पर कड़ाई से कार्रवाई होगी।

नगर आयुक्त इंद्रजीत सिंह ने बताया कि शहर में सात लाख से अधिक प्रॉपर्टी है। अब तक तीन लाख 92 हजार प्रॉपर्टी का गृहकर जमा हो चुका है। तीन लाख आठ हजार ऐसे प्रॉपर्टी धारक हैं, जिन्होंने अब तक गृहकर नहीं जमा किया है। शहर में 86000 व्यावसायिक भवन भी हैं, जिनमें से 55 हजार का गृहकर जमा हो चुका है। शेष को जल्द ही नोटिस जारी कर सीलिंग की जायेगी। शहर में 81 बड़े बकायेदार हैं जिन्हें एक करोड़ रुपये से अधिक टैक्स जमा करना है। इसके साथ ही 50 लाख रुपये से अधिक टैक्स जमा करने वाले 139 बकायेदार हैं। 50 हजार रुपये से अधिक के 26,300 बकायेदार हैं।

ऐसे ऑनलाइन करें भुगतान

मुख्य कर निर्धारण अधिकारी अशोक सिंह ने बताया कि ऑनलाइन हाउस टैक्स पेमेंट के लिये निगम की वेबसाइट lmc.up.nic.in पर जाना होगा। अपना मोबाइल नंबर पंजीकृत करवाने के बाद करदाता को हाउस आईडी भरनी होगी। जिसके पास नई हाउस आईडी है, वह उसे भरेगा, लेकिन जिसके पास पुरानी हाउस आईडी है तो उसे नो योर हाउस टैक्स के ऑप्शन में जाकर नई हाउस आईडी जाननी होगी। यह पुरानी हाउस आईडी डालने पर मिल जायेगी। उसे भरने के बाद भवन स्वामी का यूजर आईडी पासवर्ड बन जायेगा, जिसके बाद वह हाउस टैक्स पेमेंट के विकल्प पर जाकर टैक्स जमा कर सकते हैं।

बाबा नीम करोली का मूल मंत्र : सुख समृद्धि और पैसों की होगी बारिश...

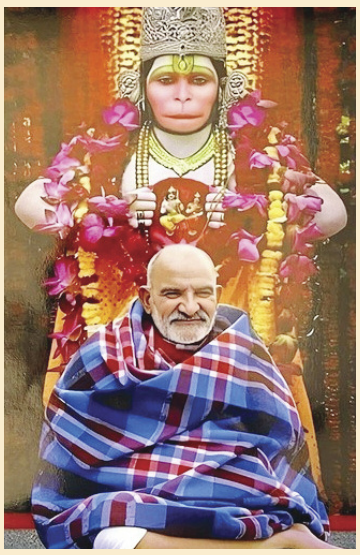

नीम करोली बाबा ने अपने आध्यात्मिक उपदेशों में जीवन को सफल और धनवान बनाने के कुछ नियम बताये हैं। ये नियम न केवल आर्थिक संपन्नता बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक शांति भी प्रदान करते हैं। नीम करोली बाबा का मानना था कि सच्ची समृद्धि केवल धन अर्जित करने तक सीमित नहीं है।उन्होंने कहा कि धन का सही उपयोग तभी संभव है जब व्यक्ति आध्यात्मिक रूप से संतुलित हो। उनकी शिक्षा में यह बात प्रमुख थी कि सेवा, करुणा और सत्य के मार्ग पर चलकर व्यक्ति अपनी जिंदगी को सफल बना सकता है।

सेवा का महत्व

नीम करोली बाबा ने सेवा को सबसे बड़ा धर्म बताया। जो दूसरों की सेवा करता है, उसकी हर जरूरत भगवान स्वयं पूरी करते हैं। दूसरों की मदद करना और समाज के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखना सफलता की ओर पहला कदम है।

कड़ी मेहनत और ईमानदारी

बाबा के अनुसार, मेहनत से कमाया गया धन हमेशा सुखद परिणाम देता है। धन कमाने का सही तरीका केवल ईमानदारी और परिश्रम है। अनुचित तरीकों से कमाया गया पैसा जल्द ही बर्बाद हो जाता है। बाबा ने हमेशा आभार व्यक्त करने की शिक्षा दी और कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवन में मिले हर अवसर और सहायता के लिये आभारी रहता है, उसकी प्रगति सुनिश्चित होती है। आभार प्रकट करने से जीवन में सकारात्मकता बनी रहती है।

नियमित ध्यान और प्रार्थना

नीम करोली बाबा ने ध्यान और प्रार्थना को अमीर बनने का एक अचूक तरीका बताया। ध्यान से मन को शांति मिलती है और सही निर्णय लेने में मदद होती है। बाबा के अनुसार, जो व्यक्ति अपने भीतर शांति स्थापित करता है, वह बाहरी दुनिया में हर सफलता प्राप्त कर सकता है।

दान और साझा करना

नीम करोली बाबा ने दान की परंपरा को बढ़ावा दिया। उनका कहना था कि धन जितना बांटा जाता है, उतना ही बढ़ता है। जो व्यक्ति दूसरों की भलाई के लिये काम करता है, उसके पास धन और खुशियां कभी खत्म नहीं होतीं।

सरल जीवन और उच्च विचार

नीम करोली बाबा के जीवन का सबसे बड़ा संदेश था कि सरल जीवन जियो, लेकिन अपने विचारों को ऊंचा रखो। उन्होंने दिखावे और लालच से बचने की सलाह दी।उनका मानना था कि सादगी में ही सच्ची खुशी और स्थायी सफलता है।

समय का सदुपयोग

नीम करोली बाबा ने समय की कीमत को समझने की शिक्षा दी। उन्होंने कहा कि जो समय का सम्मान करता है, वही अपने जीवन में बड़ी उपलब्धियां हासिल करता है। समय का सही प्रबंधन धन अर्जित करने का महत्वपूर्ण पहलू है।

होमगार्ड विभाग के लिये 'सर्वसिद्धि प्रदः कुंभः' बना 'सर्वधनप्रदः कुंभः'

कुंभ ड्यूटी पर ना जाने के एवज में कई कमांडेंट जवानों से की वसूली

- जवान रह गये जिलों में और 50 वर्ष के होमगार्डों को भेजा कुंभ ड्यूटी करने
- बुजुर्ग होमगार्डों ने वसूली करने वाले कमांडेंट्स को कहा: परिवार सुखी नहीं रहेगा, गंगा मइया देख रही हैं...

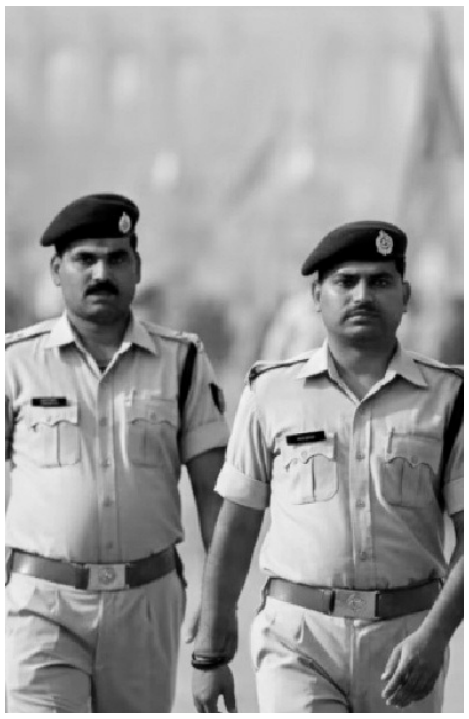

पिन्टू सिंह

प्रयागराज। सर्वसिद्प्रदः कुंभ महाकुंभ 2025 सचमुच सर्व सिद्धियों का प्रदाता है, कुंभ स्नान से सभी जीव, जैसे मानव, राक्षस, गंधर्व सभी सुफल प्राप्त करते हैं। यहां तक कि गरीब, अमीर, पापी, दुरात्मा, भिक्षु, दीन-हीन आदि सभी मोक्ष की कामना से डुबकी लगाते हैं और मनोवांछित सुफल बटोरते हैं। उत्तर प्रदेश शासन का मान है कुंभ की सफलता, जो संपूर्ण विश्व में प्रदेश की गरिमा और महत्ता को स्थापित कर रहा है। जहां सभी विभाग और सरकार के अंग पूरी क्षमता के साथ दिन-रात व्यवस्था में जुटे हैं, वहीं दूसरी तरफ होम गार्ड विभाग ने इसमें भी कमाई का जरिया ढूंढ लिया। होमगार्ड मुख्यालय ने सभी जिला कमांडेंट को आदेश किया कि स्वस्थ और कम उम्र के होमगार्ड कुंभ ड्यूटी में भेजे जाये। हालांकि सभी जिलों में 50 साल से कम उम्र के होमगार्ड मौजूद हैं, फिर भी कमांडेंट ने कम उम्र के होमगार्ड को छोड़कर अधिक उम्र के जवानों को कुंभ में भेजा और छोड़ने के नाम पर 5 हजार से लेकर 15000 रुपए वसूले। पूर्व अपर प्रमुख सचिव बी.एल.मीणा ने प्रयागराज दौरे में बुजुर्ग होमगार्डों को ड्यूटी करते देख निर्देशित किया था कि 50 वर्ष से अधिक उम्र के जवानों को हटाकर कम उम्र वाले होमगार्डों को तैनात किया जाये।

इस निर्देश से अधिसंख्य जिलों के वसूलीबाज कमांडेंट का ब्लड प्रेशर हाई हो गया,क्योंकि डयूटी के नाम पर लाखों रुपये की वसूली हो चुकी थी। लेकिन श्री मीणा के तबादला के बाद मुख्यालय के अफसरों ने डीजी बी. के. मौर्य को समझा दिया कि मुख्यालय के जिम्मेदार अधिकारियों ने डीजी साहब को समझा दिया कि कम उम्र के होमगार्ड अधिकारियों के यहां और विशेष ड्यूटियों पर लगे हैं, उन्हें जिला कमांडेंट भेज नहीं पायेंगे। उनको भेजने से जिले के बड़े अधिकारी नाराज होंगे। बस यही खेल का जरिया बन गया और इसी की आड़ में जिला कमांडेंटों ने जमकर वसूली किया। स्वयं भी थैली भरा और मुख्यालय के विभागीय आईजी साहब और अन्य को भी खुश कर दिया। कुछ जिला कमांडेंट को छोड़ दीजिये तो, अधिकांश ने इस दरिया में हांथ धोया है। कुंभ में तैनात 50 वर्ष से अधिक उम्र के अधिकांश होमगार्डों ने द संडे व्यूज़ से अपना दर्द साझा किया और ये भी कहा कि कुंभ में ड्यूटी लगाने के नाम पर वसूली करने वाले कमांडेंट के परिवार कभी सुखी नहीं रहेंगे,गंगा मइया सब देख रही हैं...। ये तो रूपये कमाने की हवस रखने वाले कमांडेंट जानें लेकिन एक बात तय है कि बद्दुआ से ताकतवर दुनिया में कुछ भी नहीं है।

कुंभ के भव्य आयोजन के लिये सरकार ने दोनों हाथों से सभी विभागों को पर्याप्त धन लुटाया है, जिससे कुंभ के आयोजन और व्यवस्था में सारे विभाग अपनी सर्वोच्च क्षमता का प्रदर्शन करके सफल बनायें और सरकार का नाम रोशन करें। जहां सभी विभाग और सरकार के अंग पूरी क्षमता के साथ दिन-रात व्यवस्था में जुटे हैं, वहीं दूसरी तरफ होमगार्ड विभाग ने इसमें भी कमाई का जरिया ढूंढ लिया। होम गार्ड मुख्यालय ने सभी जिला कमांडेंट को आदेश किया कि स्वस्थ और कम उम्र के होमगार्ड कुंभ ड्यूटी में भेजे जाये। हालांकि सभी जिलों में 50 साल से कम उम्र के होमगार्ड मौजूद हैं, फिर भी कमांडेंट ने कम उम्र के होमगार्डों को छोड़कर अधिक उम्र के जवानों को कुंभ में भेजा और छोड़ने के नाम पर 5 हजार से लेकर 15000 रुपए वसूले। हालांकि द संडे व्यूज़ इन बातों की पुष्टि नहीं करता है।

सूत्रों ने बताया कि झांसी से 50 वर्ष से अधिक उम्र के 100 होमगार्ड, बरेली से 107, रामपुर से 115, बदायूं से 97, बस्ती से 77, अलीगढ़ से 63, सोनभद्र से 87, वाराणसी से 84, चंदौली से 51, भदोही से 65, आगरा से 63, मथुरा से 41, फि रोजाबाद से 24, मैनपुरी से 25, कुशीनगर से 65, देवरिया से 85, बलरामपुर से 43, श्रावस्ती से 32, सीतापुर से 63, बिजनौर से 75, सहारनपुर से 91, सुल्तानपुर से 42, बाराबंकी से 75, मिर्जापुर से 25 होमगार्डों को कुंभ ड्यूटी पर भेजा गया है। इस तरह प्रदेश के अधिकांश कमांडेंट ने खुले हाथ से वसूला। प्रति होम गार्ड 5000 से 10000 अपने लिये लिया है और 5000 अपने मातहतों को दिलाया है। यह महाकुंभ होमगार्ड विभाग के अधिकारियों के लिये 'सर्व धन प्रदः कुंभः' होकर रह गया है। ईश्वर इन अधिकारियों को भी मोक्ष दे...।

इस बाबत उत्तर प्रदेश होमगार्ड आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय पाण्डेय ने कहा कि होमगार्ड विभाग के अधिकांश अधिकारी बहुत ही जिम्मेदार और काबिल हैं। हमारे अधिकारी वृहद आयोजनों जैसे कुंभ,निर्वाचन आदि में पूरे संयम से कार्य करते हैं। वर्तमान में विभाग में नई भर्ती ना हो पाने के कारण कम उम्र के होमगार्ड बहुत ही कम हैं, जिस वजह से कमांडेंट को हर मोर्चे पर कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा है। ऐसे बृहद और पवित्र आयोजन पर शायद ही कोई गलती करे। फिर भी यदि किसी ने गलती किया है और उसकी शिकायत प्राप्त होती है तो डीजी साहेब समुचित जांच करा सकते हैं।

पुलिस का फर्जी मोनोग्राम, फर्जी पी कैप, फर्जी डबल स्टार लगाने वाले बीओ नीरज सिंह पटेल पर होगी कार्रवाई?

पूर्व आई. जी. पी.के. तिवारी ने शासन में गलत मोनोग्राम लगाकर जाने पर तीन राजपत्रित अधिकारियों के खिलाफ कराया था एफआईआर

पिन्टू सिंह

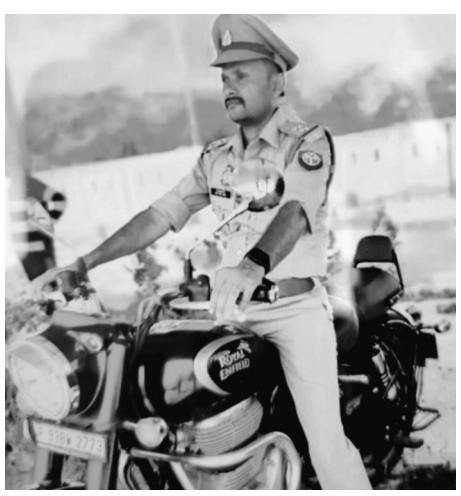

झांसी। होमगार्ड विभाग के बुलेट राजा बीओ नीरज सिंह पटेल के फर्जीवाड़ा की एक नहीं कई कहानियां है। राजनीति के मठाधीशों की तरह इस विभाग में भी जातिवाद का जहर फैल गया है। मुख्यालय पर इसी मानसिकता के कुछ अधिकारी जनपदों में (कर्मचारियों) की गोटियां बिछा रखे हैं। जरुरी नहीं कि जिसने अपने नाम के आगे 'सिंह' लगा रखा हो, वो 'ठाकुर' साहेब ही हैं। कुछ इसी तरह की सोच रखने वाले अफसर मुख्यालय पर भी बैठे हैं,जो अपने नाम के आगे 'सिंह' लगाकर 'ठाकुर' साहेब भी कहलाने का भ्रम फैला रखे हैं। ये लोग सूबे में जाति- बिरादरी का गंदा खेल खेल रहे हैं। अब झांसी के फ्राड बीओ नीरज सिंह पटेल की ही बात करें, तो इसने पुलिस विभाग का फर्जी मोनोग्राम लगाने, दो स्टार लगाने और पी कैप लगाने का अपराध किया है। इसक अलावा इसकी भर्ती वर्ष 2016 में हवलदार प्रशिक्षक के पद पर हुयी। तैनाती जिला कमांडेंट कार्यालय, झांसी पर हुयी। वर्ष 2022 में इसका प्रमोशन बीओ पद पर हुआ और उसके बाद भी इसे जिला कार्यालय, झांसी में ही तैनात कर दिया गया। कैसे ? किस नियमावली के तहत? आखिर बुलेट राजा कहां के बादशाह हैं,जो इनके लिये अफसरों ने नियमावली की धज्जियां उड़ा दी? सीधी बात करें तो प्रमोशन के बाद भी उसी जनपद, झांसी में तैनाती के लिये इसने मुंह खोलने वाले अफसरों के मुंह पर नोटों की गड्डियां मार दी। मुख्यालय पर बैठे आका जो सरनेम तो 'सिंह' का लगाते हैं लेकिन हैं... ने पूरा आशीर्वाद नीरज सिंह पटेल पर रख दिया। बता दें कि पूर्व आईजी, पीके.तिवारी ने गलत मोनोग्राम लगाकर शासन में जाने पर पूर्व डी आई जी स्वः एस. के. सिंह, पूर्व एस.एस.ओ.सुनील कुमार और पूर्व कमांडेंट के.एच.मिश्रा के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराया था। तीनों अधिकारियों को कोर्ट से राहत मिली थी। अब देखना है कि अपने को होमगार्ड विभाग का बीओ बताने में शर्मीदगी महसूस करने और पुलिस का फर्जी मोनोग्राम, दो स्टार लगाने व पी कैप लगाने वाले नीरज सिंह पटेल के खिलाफविभाग एफआईआर दर्ज कराने का दम दिखाता है?

झांसी के जिला कमांडेंट कार्यालय में तैनात बीओ नीरज सिंह पटेल पुलिस का फर्जी मोनोग्राम लगाकर बुलेट चला रहा है। कायदे से बीओ पद पर होने की वजह से इसे एक बैच लगाकर चलना चाहिये लेकिन इसने कंधे पर दो बैच लगा रखा है और बैरेट कैप गोल टोपी लगाना चाहिये लेकिन इसने पी कैप लगाया है। द संडे व्यूज ने फोटो सहित इस खबर को वायरल किया, जिसके बाद होमगार्ड विभाग और पुलिस विभाग में हड़कम्प मच गय गया। पुलिस विभाग के अफसरों ने तो यहां तक कह दिया कि होमगार्ड विभाग एक्शन लेता है तो ठीक वर्ना हमलोग कार्रवाई करेंगे। झांसी में तैनात होमगार्डों ने बताया कि बीओ नीरज सिंह पटेल पुलिस का फर्जी मोनोग्राम लगाकर इलाका में पुलिस का दारोगा बताकर धन-उगाही भी ठीक ठाक करता है। पड़ताल करने के बाद पता चला कि वर्ष 2016 में नीरज सिंह पटेल हवलदार प्रशिक्षक पद पर भर्ती हुआ था और इसकी पहली तैनाती जिला कमांडेंट कार्यालय, झांसी में हुयी थी। उसके बाद वर्ष 2022 में प्रमोशन हुआ और बीओ पद पर झांसी में ही तैनाती कर दी गयी। नियमतः इसका तबादला दूसरे जनपद में होना चाहिये लेकिन अफसरों ने ऐसा नहीं किया। क्यों? इस विभाग में मुख्यालय के कुछ अफसरों की वजह से आये दिन नियमों की धज्जियां उड़ती रहती है और जनमानस में ईमानदारी से काम करने वाले अफ्सरों को भी शर्मिंदा होना पड़ता है।

थोड़ा पीछे चलें तो 1992 के दशक में इसी विभाग में डीआईजी आर.बी.सिंह हुआ करते थे। जब इनकी गाड़ी मुख्यालय गेट पर रुकती तो एक भी कर्मचारी बाहर नहीं दिखायी पड़ते थे। जो घूमते दिख गया समझो उसकी तो खैर नहीं। अब होमगार्ड विभाग के बड़े साहेब की गाड़ी रुकती है तो चाटुकारिता करने वालों के चेहरों पर मुस्कान और सलामी ठोंक कर चरण वंदना करने की...। समझ गये...। बताया जाता है कि झांसी का फर्जी दारोगा बन रंगबाजी रेलने वाले बीओ नीरज सिंह पटेल पर मुख्यालय पर तैनात सरनेम 'सिंह' लिखने वाले अफ्सर का है।

यूनियन कार्बाइड सियासत के घेरे में

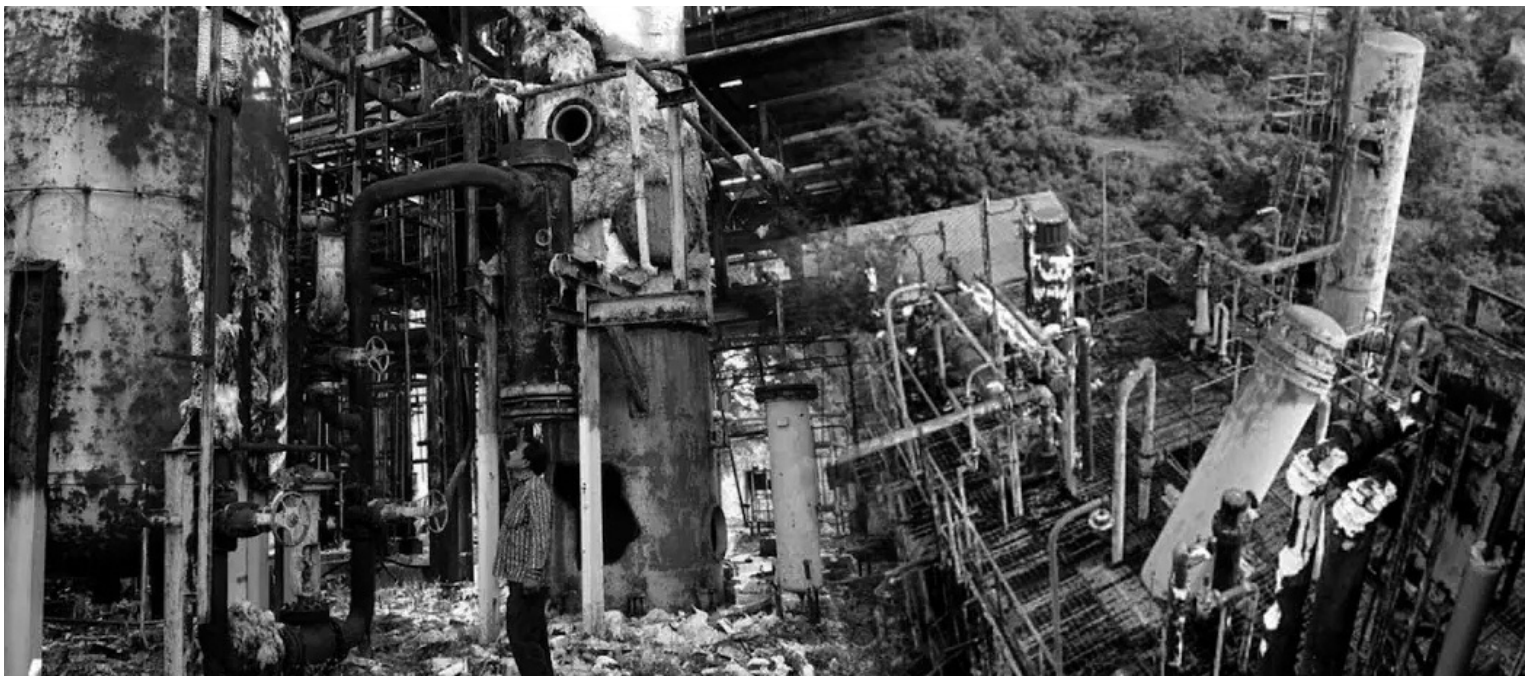

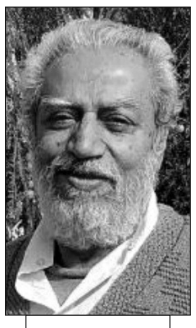

रघु ठाकुर

मुख्यमंत्री ने कहा है कि कचरे का निस्तारण सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के तहत सावधानीपूर्वक हो रहा है। इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिये। उन्होंने कहा कि कचरे में 60 स्थानीय मिट्टी व 40 प्रतिशत रसायनिक अवशेष तथा विशेषज्ञों के अनुसार 25 वर्ष में कचरे का विषैला प्रभाव खत्म हो जाता है, तो यह प्रश्न उठता है कि 40 वर्ष हो गये, जब स्वतः सरकार के अनुसार विषैला प्रभाव समाप्त हो गया है तो फिर उसे भोपाल में क्यों नहीं जलाया गया?

अंततः यूनियन कार्बाइड के कचरे को पीथमपुर में जाकर नष्ट करने का तय हुआ। हाईकोर्ट के निर्देश व मध्य प्रदेश सरकार की पहल पर यह निर्णय अमल में आना शुरू हुआ। 1984 में लगभग 40 साल पहले भोपाल में यूनियन कार्बाइड में गैस रिसी थी और जिसके चलते सैकड़ों लोग मारे गये थे और लाखों लोग प्रभावित हुये थे। यूनियन कार्बाइड का कारखाना कांग्रेस सरकार के कार्यकाल में ही 'मिक' गैस का रिसाव हुआ था। यह गैस त्रासदी दुनिया में एक बड़ी त्रासदी थी। यूनियन कार्बाइड के मालिक विदेशी एनडरसन थे और उस समय स्व. अर्जुन सिंह म.प्र. के मुख्यमंत्री थे और तथा केंद्र में स्व. राजीव गांधी, श्रीमती इंदिरा गांधी की हत्या के बाद प्रधानमंत्री बन चुके थे। यद्यपि यह भी विचित्र है और हमारे देश में जनतंत्र कितना बिकाऊ है, इसका भी प्रमाण है कि लोकसभा चुनाव भोपाल में हुये इस गैस त्रासदी के कारण 6 माह के लिये स्थगित कर दिये गये थे। प्रदेश सरकार ने इन अवधि में मुफ्त राशन बांटना शुरु किया था जिसकी कोई सीमा नहीं थी, जो जितना ले जा सकता है, वह ले जाये और 6 माह के बाद जब चुनाव हुये तो इसी कांग्रेस पार्टी का प्रत्याशी, जो इस घटना के लिये सबसे बड़ा अपराधी था, भारी मतों से जीतकर आये। लगातार मीडिया के प्रचारात्मक दबाव में कंपनी के मालिक के खिलाफ भोपाल की अदालत में मुकदमा दर्ज हुआ था और भारत सरकार के निर्देश पर कंपनी के मालिक एंडरसन दिखावटी पेशी करने के लिये भोपाल आये थे। वे अमेरिका से चलकर दिल्ली पहुंचे थे और दिल्ली से शायद सरकारी विमान से भोपाल आये थे। भोपाल में कलेक्टर और एस.पी. ने उनकी अगवानी की थी तथा कोर्ट ने उन्हें जमानत दे दी और उसके बाद वह वापस नहीं लौटे। सरकारें कैसे वैश्विक पूंजीपतियों के दबाव में काम करती हैं, उसका यह प्रमाण था। परंतु इतनी बड़ी घटना के बाद भी भोपाल के मतदाताओं का जमीर नहीं जागा।

यूनियन कार्बाइड से जो हर्जाने की राशि आयी उसकी बंदरबांट शुरू हुई और जो जितना ताकतवर था वह अपने हिस्से में सही या गलत, उतना ही ले गया। चूंकि मिक गैस भारी होती है अतः उसका सर्वाधिक प्रभाव भोपाल के निचले हिस्से में हुआ था, जहां आमतौर पर भोपाल के गरीब लोग रहते थे, परंतु कुछ ही समय बाद नये भोपाल के ऊंचाई पर स्थित उन पढ़े-लिखे और ताकतवर लोगों ने हर्जाना व पैसा मांगना शुरू कर दिया, जिनमें से शायद ही कोई वास्तविक गैस पीड़ित हो। यह मांग एक प्रकार से राजनैतिक एजेंडा बन गयी। लगभग 25 वर्ष पूर्व स्व. आलोक प्रताप सिंह ने जबलपुर उच्च न्यायालय में एक याचिका दायर की थी कि यूनियन कार्बाइड का जो कचरा है वह जहरीला है अतः उसे भोपाल से हटाकर नष्ट किया जाये। इस याचिका के पीछे क्या कारण थे या कौन लोग थे यह कहना कठिन है परंतु हाईकोर्ट ने म.प्र. सरकार को कचरा हटाने के और उसके निस्तारण के निर्देश दिये। यह भी विचित्र है क्योंकि गैस घटना के कुछ दिनों बाद भोपाल के लोगों में सुरक्षा का विश्वास जगाने के लिये दो घटनायें हुयी थी-

1. स्वः राजीव गांधी प्रधानमंत्री व स्वः अटल बिहारी वाजपेयी विरोधी दल के नेता साथ-साथ भोपाल आये थे। कारखाने में गये थे और यह प्रचारित हुआ था कि गैस का जहरीलापन खत्म हो गया है। इस घटना को मीडिया ने जोर-शोर से प्रचारित किया था। हालांकि वही मीडिया अब अलग पक्ष रख रहा है। स्वः राजीव गांधी, स्वः अटल बिहारी वाजपेयी जी की यह मित्रता व्यक्तिगत थी और दोनों दलों के छिपे गठबंधन की भी थी।
2. दूसरी घटना हुई थी कि जब स्वः मोतीलाल वोरा मुख्यमंत्री थे, भोपाल में एक यज्ञ स्वः शंकराचार्य स्वरूपानंद जी के सानिध्य में आयोजित किया गया था जो शासन द्वारा प्रायोजित था। जिसका भारी प्रचार हुआ था कि यह यज्ञ भोपाल के वायुमंडल के शुद्धिकरण के लिये है। जब प्रधानमंत्री व विरोधी दल के नेता ने गैस के असर को समाप्त होने का प्रमाण दे दिया जब स्वः शंकराचार्य ने वायुमंडल को शुद्ध कर दिया तो यह कचरे का जहर कहां से आ गया?

हाईकोर्ट के निर्देश के बाद लगातार प्रदेश सरकार इस कचरे के निस्तारण के लिये स्थान खोजने में प्रयासरत थी और अंततः जाकर यूनियन कार्बाइड का 337 टन कचरा धार जिले के पीथमपुर (जो कि एक औद्योगिक केंद्र है), में निस्तारण का फैसला हुआ। कचरे की पहली खेप जो शायद 33 टन की है वह पहुंचा दी गयी है। एक प्रमुख दैनिक अखबार ने इस घटना को ऐसा छापा है कि जैसे यह कोई महान घटना हो। उसके अनुसार आखिर 40 साल बाद भोपाल का बोझ उतरा परंतु यह नहीं सोचा जा रहा है कि यह कचरा अगर जहरीला था और बोझ है तो इसे पीथमपुर क्यों ले जाया गया? आखिर जो लोग वहां रहते हैं, क्या वे इंसान नहीं हैं? राजधानी के जहर को सत्ता की ताकत से राज्य के छोटे कस्बे में ले जाकर वहां के जन-जीवन को खतरे में डालना क्या उचित है? अमानवीय नहीं है? यह भी कहा जा रहा है कि इस कचरे को 1200 डिग्री सेल्सियस पर जलाया जायेगा जिसमें 150 मजदूर लगेंगे। अगर कचरे को जलाना उसका हल था तो भोपाल में क्यों नहीं जलाया गया? यूनियन कार्बाइड के आसपास अभी भी सघन बस्तियां बसी हैं जहां हजारों लोग रहते हैं। प्रति वर्ष कारखानों में 3 दिसंबर को प्रार्थना सभायें इत्यादि होती हैं। यूनियन कार्बाइड परिसर में जानवरों व लुके छिपे लोगों का आना-जाना होता है। अगर वह सभी सुरक्षित हैं तो इसका मतलब कचरे में जहर नहीं बचा है। इसके बावजूद भी अगर उच्च न्याायलय व सरकार को केवल भोपाल के स्वास्थ्य की चिंता है तो यह एक असंवैधानिक निर्णय व कदम है, जो उच्च न्यायालय व सरकार उठा रही है।

पीथमपुर और इंदौर में स्थानीय लोगों ने इसका विरोध भी शुरू किया है और स्थानीय भाजपा के लोगों की यह लाचारी है कि वे अपने राजनैतिक हितों के आधार पर इस विरोध में भले ही दिखावे को सही पर सहभागी बने। अब इस विरोध को शांत करने के लिये मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भाजपा के नेता व सरकार के वरिष्ठ मंत्री कैलाश विजयवर्गीय को जिम्मा दिया है। निः संदेह यह उनका चतुर निर्णय है, क्योंकि कैलाश विजयवर्गीय स्वतः ही पहले पीथमपुर के कचरे के निस्तारण का विरोध कर चुके हैं और अब उन्हें ही इसका समर्थन करना है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि कचरे का निस्तारण सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के तहत सावधानीपूर्वक हो रहा है। इस मुद्दे का राजनीतिकरण नहीं होना चाहिये। उन्होंने कहा कि कचरे में 60 स्थानीय मिट्टी व 40 प्रतिशत रसायनिक अवशेष तथा विशेषज्ञों के अनुसार 25 वर्ष में कचरे का विषैला प्रभाव खत्म हो जाता है, तो यह प्रश्न उठता है कि 40 वर्ष हो गये, जब स्वतः सरकार के अनुसार विषैला प्रभाव समाप्त हो गया है तो फिर उसे भोपाल में क्यों नहीं जलाया गया? 12 साल पहले जर्मनी, जो भोपाल से 6000 किमी दूर है, वहां की संस्था जीआईजेड ने मात्र 25 करोड़ रुपये में कचरे को जर्मनी के हम्बर्ग में ले जाकर निस्तारण करने का प्रस्ताव दिया था, तब सरकारने इसे मंजूर क्यों नहीं किया? और अब इसी कचरे के निस्तारण पर केंद्र सरकार को 126 करोड़ रुपया खर्च करना पड़ रहा है? इस कचरे को पहले गुजरात के अंकलेश्वर और महाराष्ट्र के नागपुर में भी निस्तारण की योजना बनायी थी परंतु वहां के स्थानीय लोग व राज्य सत्ता की असहमति से इस योजना को रद्द कर दिया गया था। उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री नरेन्द्र मोदी थे, उन्होंने अपने प्रदेश के कचरे के निस्तारण को इंकार किया था। कहीं ऐसा तो नहीं है कि अब प्रधानमंत्री के इशारे पर लाचार मुख्यमंत्री को म.प्र. में ही इसके निस्तारण के लिये स्वीकृति देना पड़ी। हालांकि 4 जनवरी 2025 को स्थानीय लोगों ने जिस तीव्रता से पीथमपुर में कचरा जलाने का विरोध किया। दो लोगों ने आग लगाकर आत्महत्या का निर्णय किया, उसके बाद राज्य सरकार ने इस कार्यवाही को रोक दिया। कहा है कि जन भावनाओं से माननीय हाईकोर्ट को अवगत करायेंगे। संभवतः 6 जनवरी को इसकी सुनवाई होना थी। अब देखें हाईकोर्ट क्या निर्देश देता है। किस नये शहर को अब बली का बकरा बनाया जायेगा, देखना है।

यूनियन कार्बाइड लगभग 85 एकड़ की जमीन पर स्थापित था और इस कचरे के हटने के बाद जमीन पर शुद्धिकरण का कुछ नाटक होगा और फिर शायद यह जमीन बड़े-बड़े बिल्डरों को जिनकी पहुंच केंद्रीय सत्ता, राज्य सत्ता और मीडिया तक है, को दे दिया जायेगा। जहरीले कचरे के भय से और वैसे भी अपनी आर्थिक स्थिति के चलते यहां जमीन कोई सामान्य व्यक्ति तो नहीं ले सकेगा। संभव है इस आधार पर इस जमीन को सस्ते दामों पर मिट्टी के भाव पर बिल्डर या उद्योगपति खरीद लें और उसका इस्तेमाल अपने व्यापार के लिये करें।अंत में इतना ही कि अगर सरकार यह मानती है कि यूनियन कार्बाइड में कचरे का जहर समाप्त हो गया है तो सरकार को चाहिये कि विधायक, शीर्ष अधिकारी, सांसदों, पूर्व सांसदों व पूर्व विधायकों को वहां आवास बनाकर दिया जाये। 85 एकड़ जमीन में शानदार विलासितापूर्ण भवन बन जायेंगे और हमारे विधायक, सांसद,अफ्सर बढिया आवासों में रह सकेंगे। यह भी समाचार आये हैं कि आज या कल पूर्व मंत्री दत्तीगांव, केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर, विधायक नीता वर्मा आदि नेता मुख्यमंत्री से मिलेंगे और उनसे रिव्यू पिटीशन दायर करने की अपील करेंगे। यह आश्चर्यजनक है कि इतने लंबे समय से यह प्रकरण चल रहा है व पीथमपुर में जहरीले कचरे के निपटाने के समाचार छपरहे हैं परंतु भाजपा के केंद्रीय मंत्री, सांसद व विधायकों को मुख्यमंत्री से मिलने का समय नहीं मिला और अब अगर सरकार रिव्यू पिटीशन दायर करेगी तो जो कदम कचरे के निस्तारण के लिये पीथमपुर में करने का काम बढ़ा चुके हैं, कचरे की पहली खेप पहुंच चुकी है, सारा इलाका पुलिस छावनी बना हुआ है, गड्ढे खोद दिये गये हैं, लाठियां चल रही हैं, तब रिव्यू पिटीशन दायर करने का क्या औचित्य है? क्या सुप्रीम कोर्ट या हाईकोर्ट नहीं पूछेगा कि कचरे की पहली खेप के निस्तारण को लाने के बाद अब रिव्यू का क्या अर्थ है? लगता है कि शायद यह जनप्रतिनिधि अपनी राजनैतिक सुरक्षा के दिखावे के लिये कदम उठा रहे हैं। कांग्रेस पार्टी भी केवल राजनैतिक लाभ के लिये बयानबाजी कर रही है। मीडिया के अनुसार जीतू पटवारी, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष, श्रीमती सुमित्रा ताई से मिले। इतने वर्षों से जब यह मामला कोर्ट में चल रहा था तब वे व उनकी पार्टी मौन थी, उनकी पार्टी ने कभी भी विधानसभा या संसद में यह मुद्दा नहीं उठाया। जबकि वह स्वतः भी मालवा के निवासी हैं। कुल मिलाकर भाजपा व कांग्रेस तुम दोषी-तुम दोषी का नाटक खेलेगी, आम जनता को मूर्ख बनायेगी और सरकार कचरे के साथ-साथ जन आक्रोश का निस्तारण कर देगी।

गुरु गोरखनाथ और गौशाला की गायों से योगी आदित्यनाथ का क्या है संबंध!

वेद-पुराणों को खंगालें तो योगी गोरखनाथ का जिक्र हर युग में मिलता है। कलयुग में संत कबीर के साथ। द्वापर में पांडवों के साथ। त्रेता में भगवान राम के साथ और सतयुग में महादेव शिव के साथ भी। पता चलता है कि ये सब कुछ सिर्फकिस्से- कहानियां नहीं, बल्कि बाबा गोरखनाथ के धाम में इन कहानियों से जुड़े कई सबूत आज भी दिखायी देते हैं। हम आपको वे कहानियां भी दिखायेंगे, लेकिन उससे पहले ये देखना जरूरी है कि आखिर योगी मत्येन्द्रनाथ और योगी गोरखनाथ के बीच रिश्ता क्या है? दो चमत्कारी महायोगियों की कहानी भी एक बहुत बड़े चमत्कार से शुरू हुयी थी। गुरु गोरखनाथ को शिव का अवतार माना जाता है और ये माना जाता है कि गोरखनाथ ने किसा मनुष्य की कोख से जन्म नहीं लिया। गोरखनाथ एक अजूबे की तरह खुद पैदा हुये और कैसे इसके पीछे एक अजीबो- गरीब कहानी है। एक किवदंती के मुताबिक योगी मत्येन्द्रनाथ भिक्षा मांगने एक गांव की ओर निकले थे। योगी ने आवाज लगायी तो एक महिला घर से बाहर निकली। महिला ने योगी मत्येन्द्रनाथ को अनाज दिया और बदले में पुत्र प्राप्ति का आशीर्वाद मांगा।

योगी मत्येन्द्रनाथ उस महिला को चुटकी भर भभूत देकर आगे निकल गये लेकिन कुछ सहेलियों ने महिला का मज़ाक उड़ाना शुरु कर दिया। लोगों के डर से उस महिला को योगी की भभूत को पास के ही गौशाला में फेंक दिया। इस कहानी के मुताबिक 12 साल बाद योगी मत्येन्द्रनाथ दोबारा उसी गांव में पहुंचे। सब कुछ वैसा ही था। उस महिला को देखकर योगी मत्येन्द्रनाथ को 12 साल पुरानी कहानी याद गयी। मत्येन्द्रनाथ ने महिला से उस पुत्र के बारे में पूछा लेकिन महिला ने बताया कि लोगों के डर से उसने भभूत को गौशाला में फेंक दिया था।

योगी मत्येन्द्रनाथ अपनी शक्तियों से सब कुछ जान चुके थे, इसलिये वो गौशाला की तरफ बढ़े और एक बालक को आवाज लगायी। 12 बरस का एक बच्चा योगी मत्येन्द्रनाथ के सामने आ गया। योगी मत्येन्द्रनाथ ने उस बच्चे को नाम दिया गोरक्षनाथ जो आगे चलकर योगी गोरखनाथ कहलाये। हालांकि गोरक्ष नाम को लेकर विद्वानों की अलग अलग राय है। कुछ जानकार मानते हैं कि गोरक्ष का मतलब गाय की रक्षा से था क्योंकि बाबा गोरखनाथ गौशाला में अवतरित हुये थे तो कुछ जानकार गोरक्ष को धरती से जोड़ते हैं क्योंकि शिव के नौ-नाथ की कहानी धरती की रक्षा से जुड़ी है। धाम के लोगों का कहना है कि नाथ परम्परा में ये माना जाता है कि गोरखनाथ जी का जन्म किसी मां के गर्भ से नहीं हुआ था इसलिये वो अवतारी पुरुष हैं और जो अवतारी पुरुष होते हैं वो अजर और अमर होते हैं, उनका कोई काल खंड नहीं होता है।

योगी गोरखनाथ और मत्येन्द्रनाथ का जन्म कब हुआ, इस पर विद्वानों में लंबा मतभेद चला आया है। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने भी देश भर में घूमकर बाबा गोरखनाथ से जुड़ी जानकारियां जुटायी थीं और अंदाजा लगाया था कि उनका जन्मकाल 845 ईस्वी से 13वीं सदी में हुआ होगा लेकिन वेदों और पुराणों में लिखी कहानियां ये कहती हैं कि बाबा गोरखनाथ आज भी इसी धरती पर हैं और अलग- अलग रुपों में महादेव का अंश बनकर मौजूद हैं। इन दावों पर यक़ीन करना जितना मुश्किल था उतना ही मुश्किल था इस धाम में मौजूद निशानियों को खारिज कर देना। इस मंदिर के योगी बहुत से तर्क से दे रहे थे जो साबित करते हैं कि बाबा गोरखनाथ सतयुग से कलयुग तक मौजूद हैं। शुरुआत सतयुग से ही करते हैं जिसका पहला सबूत है शिव पुराण की एक कहानी जिसमें कहा गया कि धरती पर गोरखनाथ का महायोग देखकर सभी देवता हैरान थे।उनमें एक नाम देवी पार्वती का भी था। गोरखनाथ के हठयोग को देखकर देवी पार्वती अचंभे में पड़ गई और महादेव से गोरखनाथ के बारे में पूछा। जवाब में महादेव ने कहा कि गोरखनाथ उन्हीं का रुप हैं।

ऐसी ही एक कहानी का जिक्र नादर पुराण में भी मिलता है। नारद पुराण में आता है कि प्रभु से भक्त कह रहे हैं कि गोरखनाथ को किस मंत्र से पूजा जाये तो शिव कहते हैं कि मैं स्वयं गोरख हूं? अब बारी आती है त्रेता युग की। माना जाता है कि गोरखपुर का ये गोरखधाम त्रेता युग से मौजूद है। लोग मानते हैं कि त्रेता युग में यही स्थान बाबा गोरखनाथ की तपोभूमि हुआ करता था। इससे जुड़ी एक कथा वाल्मीकि रामायण में भी मिलती है जिसका रिश्ता है रावण वध के बाद भगरान राम की अयोध्या वापसी से। गुरु गोरखनाथ की बात करते हैं तो वक्त का कोई मतलब नहीं होता। कहा जाता है कि गोरखनाथ हर युग में मौजूद थे और राम से जुड़ी कहानी भी है। कहा जाता है कि रावण के वध के बाद राम खुद गोरखनाथ के पास आये थे और उनके कानों के कुण्डल यहीं पर बदले गये थे, क्योंकि एक ब्राह्मण का वध हुआ था और राम को तभी मुक्ति मिल पायी थी। भगवान राम ब्राह्मण वध के पाप से परेशान थे। उन्होंने देश भर के कई ऋषि मुनियों से राय मांगी थी और तभी मुनि वशिष्ठ के कहने पर भगवान राम, लक्ष्मण और हनुमान बाबा गोरखनाथ के पास पहुंचे थे और बाबा गोरखनाथ से श्रीराम को इसी जगह पर दीक्षा ली थी और नाथ परम्परा से जुड़ा एक कुंडल पहनाया था। ये कुंडल आज भी नाथ परम्परा से जुड़े योगियों की एक पहचान है। हर योगी को एक अलग तरह का कुंडल पहनना पड़ता है।चाहें वो मंदिर का कोई प्रचारक हो या फिर महंत योगी आदित्यनाथ। **क्रमशः**

होमगार्ड मुख्यालय में कंट्रोल रुम से ही शुरू होती है

वर्दी को अपमानित करने की कहानी...

मदन गोपाल

लखनऊ। होमगार्ड मुख्यालय पर मुख्य प्रवेश द्वार की सीढ़ियों पर कदम रखते समय सभी की निगाहें कंट्रोल रुम पर जाती है। कंट्रोल रुम से ही वर्दी को शर्मसार करने और अनुशासन तोड़ने की शुरुआत हो रही है। कंट्रोल रुम पर तैनात कनिष्ठ प्रशिक्षक (समकक्ष बीओ)विजय पाल सिंह एक स्टार की जगह दो स्टार लगाकर एवं पी कैप पहनकर ड्यूटी करते हैं। यही वो जगह है जहां से डीजी, आईजी-पुलिस से लेकर होमगार्ड विभाग के आईजी सहित सभी सीनियर आफिसर आते-जाते हैं लेकिन...। मुख्यालय पर बने सीटीआई केन्द्रीय प्रशिक्षण संस्थान पर तैनात कनिष्ठ प्रशिक्षक विनोद कुमार, अमरेन्द्र सिंह-बीओ और राधेश मिश्रा भी दो-दो स्टार एवं पी कैप लगाकर ड्यूटी कर रहे हैं। इसी तरह, ओ. पी. सिंह-बीओ, अहसान अहमद- बीओ जब मुख्यालय पर ही नियम तोड़ने की सीख दी जा रही है तो जिलों में तैनात बीओ यदि एक के जगह दो-दो स्टार लगाकर फर्जी भौकाल काट रहे हैं तो इसमें गलत ही क्या है? मुख्यालय हो या जिला,सभी जगह तैनात लगभग 400 बीओ सिर्फ और सिर्फ डीआईजी से डरते हैं। कमांडेंट को तो खिलौना समझते हैं। कायदे से बीओ को एक स्टार और पीसी को दो स्टार लगाना चाहिये, ताकि सभी को मालूम रहे कि पीसी एक रैंक सीनियर है और बीओ एक रैंक जूनियर...। लेकिन यहां पर बीओ ही पीसी बन गये है। चौंकाने वाली बात तो ये है कि सभी बीओ दो-दो बैच लगाकर आईजी से लेकर सभी अफसरों के चैम्बर में विभागीय काम से आते-जाते हैं,अफसर देखते हैं लेकिन ना तो उन्हें हुड़की देते हैं और ना ही कार्रवाई करने की धौंस। यही वजह है कि इस विभाग में तैनात सभी बीओ वर्दी का जमकर माखौल बना रहे हैं। अधिकारियों ने बताया कि बीओ द्वारा अनुशासनहीनता बरतने में आईजी विवेक सिंह का बड़ा हाथ है। उनके पास आईजी के साथ-साथ डीआईजी, मुख्यालय का अतिरिक्त चार्ज है इसके बाद भी वे कोई कार्रवाई नहीं कर रहे हैं।

आखिर विभागीय आईजी क्या चाहते हैं...चार माह बाद वे रिटायर हो जायेंगे,तब तक नियम-कानून की धज्जियां उड़ जायेगी। वदीधारी संगठन में एक बैच से जूनियर और सीनियर की पहचान होती है लेकिन मुख्यालय से लेकर यूपी के सभी जनपदों में जिस तरह से बीओ दो-दो स्टार लगाकर सीनियरों को ढेंगा दिखा रहे हैं,उसे देख इस बात से भी इंकार नहीं किया जा सकता कि कभी जनपदों में तैनात

राधेश मिश्रा, विनोद कुमार व विजयपाल सिंह।

अमरेन्द्र सिंह-बीओ

कोई बीओ आईजी या डीआईजी का बैच लगाकर रंगबाजी रेलता पकड़ा जाये...।

नियमतः बीओ को वर्दी पर एक स्टार लगाना चाहिये लेकिन पूरे प्रदेश में तैनात बीओ दो स्टार लगाकर पूरी रंगबाजी से नौकरी कर रहे हैं। ये वदीधारी संगठन में अनुशासनहीनता के दायरे में आता है। इस पर रोक लगाने के लिये 27 अक्टूबर 2021 को तात्कालीन डीजी, होमगार्ड विजय कुमार ने प्रदेश के सभी डीआईजी, मंडलीय कमांडेंट व जिला कमांडेंट को पत्र लिखा था। पत्र में साफ तौर पर कहा गया है कि आये दिन मीडिया में में होमगार्ड विभाग से संबंधित समाचार, फोटो प्रकाशित हो रहे हैं,जिसमें होमगार्ड के अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा डयूटी के समय समुचित वर्दी धारण नहीं की जा रही है, जिससे विभागीय गरिमा पर प्रतिकूल संदेश प्रसारित हो रहा है। वर्दी का स्केल,पैटर्न निश्चित है,जिसका पूरी तरह से पालन किया जाये। पत्र में लिखा है कि होमगार्ड अधिकारी,कर्मचारी एवं अवैतनिक पदाधिकारी, स्वयंसेवक द्वारा निर्धारित स्वच्छ वर्दी,हेछ गियर धारण किया जाये। वर्दी के पैटर्न शू के अतिरिक्त कोई अन्य जूता,सैंडिल धारण ना किया जाये। गलत वर्दी निर्धारित रैंक, टोपी,नेम प्लेट,कमीज के बटन खुला रखने तथा निर्धारित जूता,मोजा न पहनने की कुप्रथा को पूरी तरह से समाप्त किया जाये। यह भी निर्देशित किया गया है कि अधिकारियों के स्तर पर गलत,अपूर्ण वर्दी धारण करने वालों की नियमित टोका-टाकी अवश्य की जाये,जिससे की यह संदेश हो कि कर्मियों को टर्न आउट सदैव अधिकारियों की निगाह में रहता है।

हो क्या रहा है? डीजी साहेब का ट्रांसफर हुआ और आदेश रद्दी की टोकरी में...। इस खेल में आईजी विवेक सिंह तो पुराने और माहिर खिलाड़ी हैं। अपने सीनियर को मुस्कराकर समझाने की कला कोई इनसे सीखे। अब देखिये,अपर प्रमुख सचिव बी.एल.मीणा ने निर्देश दिया कि कुंभ में लगे 50 वर्ष से अधिक उम्र के होमगार्डों को वापस भेजो,उनकी जगह युवा जवानों को तैनात करो। श्री मीणा का ट्रांसफर और आदेश रद्दी की टोकरी में...। सवाल यह है कि आखिर वर्दी को मजाक बनाकर नौकरी करने वाले सूबे के सभी बीओ पर नियमावली का पाठ कौन पढ़ायेगा? सवाल यह भी है कि इन मनबढ़ बीओ पर नियम तोड़ने के लिये आशीर्वाद का हाथ रखने वाले सीनियर अफसरों पर नकेल कौन कसेगा?

इस बाबत उत्तर प्रदेश होमगार्ड आफिसर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अजय पाण्डेय ने कहा कि द संडे व्यूज़ की खबर में झांसी के बीओ द्वारा अनुशासनहीनता बरती गयी है। बीओ का फोटो देखकर साफ प्रतित हो रहा है कि उसने पुलिस का मोनोग्राम, 2 स्टार और पी कैप लगाकर बुलेट पर बैठा है। ये अनुशासनहीनता और अपराध के दायरे में आता है। इस मामले में झांसी मंडल के अधिकारी जांच कर रहे हैं।

पीयूष कांत मंडलीय कमांडेंट, झांसी ने कहा कि द संडे व्यूज़ में बीओ द्वारा पुलिस का मोनोग्राम, 2 स्टार लगाने की खबरों को गंभीरता से लेते हुये मामले में जांच जिला कमांडेंट को सौंप दी है। बीओ नीरज सिंह पटेल से सात दिन के अंदर जवाब मांगा गया है। बयान के बाद उसके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जायेगी। कहा कि जिस तरह से दिख रहा है,वो पूरी तरह से अनुशासनहीनता है और मैं ये किसी सूरत में बर्दाश्त नहीं करने वाला। रिपोर्ट आने दीजिये ,फिर देखते हैं।

वेदपाल सिंह चपराना जिला कमांडेंट, बिजनौर ने कहा कि द संडे व्यूज़ की खबर को देख पता चला कि होमगार्ड विभाग में बीओ दो स्टार,पी.कैप लगा रहे हैं, जो कि होमगार्ड मुख्यालय द्वारा निर्धारित वर्दी के प्रतिकूल है। इस पर मैंने जनपद में तैनात समस्त बीओ निर्देशित किया कि मुख्यालय द्वारा बीओ पद हेतु वर्दी के संबंध में पूर्व निर्गत आदेशों का अनुपालन करते हुये पद के अनुरुप निर्धारित वर्दी ही धारण करें। इस बात का विशेष ध्यान रखें कि कोई भी बीओ 2 स्टार एवं पी कैप धारण ना करें। आदेशों का अक्षरशः पालन सुनिश्चित करें।

प्रीति शर्मा, जिला कमांडेंट,कानपुर ने कहा कि मैं किसी सूरत में अनुशासनहीनता बर्दाश्त नहीं करती। मुझे भी मालूम चला कि कुछ जनपद में वैतनिक,अवैतनिक अधिकारी, होमगार्ड स्वयं सेवक अपने पद के अनुरुप मोनोग्राम,स्टार धारण न करके पुलिस को आवंटित मोनोग्राम व स्टार तथा अपने पद से सीनियर पद के अनुरुप रैंक बैज-स्टार आदि धारण कर रहे हैं,जो कि इस विभाग द्वारा बनाये गये नियमों के सर्वथा विपरित है तथा अनुशासनहीनता व अपराध की श्रेणी में आता है। उन्होंने बताया कि इसी क्रम में जनपद के समस्त वैतनिक,अवैतनिक अधिकारियों,होमगार्ड स्वयं सेवकों को निर्देश जारी करते हुये कहा है कि वह इस विभाग हेतु निर्धारित पद के अनुरुप मोनोग्राम व स्टार धारण करें। यदि ऐसा कोई प्रकरण संज्ञान में आता है तो संबंधित के खिलाफ नियमानुसार अनुशासनिक कार्यवाही अमल में लायी जायेगी, जिसके लिये वह स्वयं जिम्मेदार होगा।

अमित कुमार वर्मा जिला कमांडेंट, गाजियाबाद ने कहा कि खबर को संज्ञान में लेते हुये मैंने तत्काल प्रभाव से अपने समस्त बीओ को निर्देश जारी कर दिया है कि यदि किसी को भी दो स्टार का बैच लगाते या पुलिस का मोनोग्राम लगाते हुये देखा तो उसके खिलाफ विभागीय कार्यवाही की जायेगी। उन्होंने कहा कि अनुशासनहीनता तो इसलिये बर्दाश्त नहीं करेंगे क्योंकि उससे विभाग और वर्दी की साख खराब होगी। बीओ मुख्यालय द्वारा निर्धारित एक स्टार ही लगायेंगे और पीसी दो स्टार लगायेंगे।

प्रतीका और मंधाना के शतक से भारत ने दर्ज की वनडे में सबसे बड़ी जीत

304
रन से आयरलैंड को हराकर किया क्लीन स्वीप

नई दिल्ली। भारतीय महिला टीम ने आयरलैंड के खिलाफ तीसरे वनडे में सबसे बड़ी जीत दर्ज की। राजकोट में खेले गये मैच में भारत ने आयरलैंड को 304 रन से हराया। यह महिला क्रिकेट में भारतीय टीम की अब तक की सबसे बड़ी जीत है। साल 2017 में आयरलैंड को ही 249 रनों से मात दी थी। वहीं, आयरलैंड के खिलाफ यह भारत चौथी 300 या उससे ज्यादा रनों से जीत है।

भारतीय कप्तान स्मृति मंधाना ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। मंधाना और प्रतीका रावल की ओपनिंग जोड़ी ने 233 रन की साझेदारी कर अपने मंसूबे जाहिर कर दिये। तेज खेलते हुये मंधाना ने 70 गेंद पर अपना शतक पूरा किया। यह भारत की तरफ से लगाया सबसे तेज शतक रहा। इससे पहले हरमनप्रीत कौर ने 2024 में साउथ अफ्रीका के खिलाफ89 गेंद पर शतक जड़ा था।

मंधाना ने 80 गेंद का सामना करते हुये 135 रन की पारी खेली। इस दौरान 12 चौके और 7 छक्के जड़े। वहीं, दूसरे छोर पर सेट हो चुकी प्रतीका रावल ने अपने वनडे करियर का पहला शतक जड़ा। प्रतीका ने 100 गेंद पर अपना पहला वनडे शतक जड़ा। प्रतीका रावल ने आउट होने से पहले 129 गेंद में 20 चौकों और 1 छक्के की मदद से 154 रन की पारी खेली। वहीं, ऋचा घोष ने 42 गेंद पर 59 रन की तेज पारी खेली।

- भारत ने 5 विकेट गंवाकर वनडे क्रिकेट इतिहास में अपना सबसे बड़ा स्कोर बनाया। भारत ने आयरलैंड को 436 रन का लक्ष्य दिया। भारत की तरफसे दो शतक और एक अर्धशतकीय पारी आयी। वहीं, आयरलैंड की ओर्ला प्रेंडरगैस्ट ने सर्वाधिक दो विकेट चटकाये। लक्ष्य का पीछा करने उतरी आयरलैंड की शुरुआत बेहद खराब रही।
- 2-0 से पिछड़ चुकी आयरलैंड की टीम पहाड़ जैसे लक्ष्य को देख सकते में आ गयी। इसका भारतीय गेंदबाजों खासकर दीप्ति शर्मा ने फायदा उठाया। तितास साधु ने भारत को पहली सफलता दिलायी। इसके बाद तो एक के बाद एक विकेट गिरते चलते गये। आयरलैंड ने 100 के स्कोर पर अपने चार विकेट गंवा दिये।
- सारा फोर्ब्स दुर्भाग्यपूर्ण तरीके से 41 रन बनाकर रन आउट हुयीं। ऑलराउंडर ओर्ला प्रेंडरगैस्ट ने 36 रन बनाकर कुछ हद तक संघर्ष किया, हालांकि वह अपनी टीम को जीत नहीं दिला सकीं। दीप्ति शर्मा ने तीन तो तनुजा कंवर ने दो विकेट चटकाये और भारत ने 3.0 से क्लीन स्वीप किया।

तबाह हो गया है भारतीय ड्रेसिंग रूम : भज्जी

स्पोर्ट्स डेस्क, लखनऊ। पूर्व भारतीय स्पिनर हरभजन सिंह को लगता है कि भारतीय ड्रेसिंग रूम में बड़े मतभेद हैं। अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुये हरभजन सिंह ने कहा कि पिछले 6-8 महीनों में भारतीय टीम से जो खबरें सामने आयी हैं, उससे संकेत मिलता है कि ड्रेसिंग रूम में दरार आ गयी है।

भारत के ऑस्ट्रेलिया दौरे के दौरान ड्रेसिंग रूम में दरार आ गयी है। रिपोर्ट्स में दावा किया गया था कि भारतीय टीम खेमों में बंटी हुयी थी और एक वरिष्ठ खिलाड़ी खुद को टीम में मिस्टर फिक्सिट के तौर पर पेश कर रहा था, जो रोहित शर्मा के बर्खास्त होने की स्थिति में अंतरिम आधार पर कप्तानी कर सकता था।

सिडनी में खेले गये अंतिम टेस्ट मैच में रोहित शर्मा को भारतीय टीम से आराम दिये जाने के बाद यह खबरें और तेज हो गयीं। मैच के दूसरे दिन भारतीय कप्तान ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें उन्होंने कहा कि उन्होंने खुद को टीम से बाहर कर लिया है।

हरभजन सिंह ने अपने यूट्यूब चैनल पर कहा कि इसे आपस में सुलझा लो। इतना ड्रामा क्यों है। हर घर में झगड़े होते हैं, लेकिन यह बाहर नहीं आना चाहिये। पिछले 6.8 महीनों में हमने बहुत सी बातें सुनी हैं। अगर अजीत अगरकर आज कहते हैं कि सरफराज खान ने ड्रेसिंग रूम की बातें लीक हैं अगर सरफराज से नहीं बल्कि कोच से लीक हुयी थी, तो क्या होगा? दोषारोपण का कोई मतलब नहीं है।

ग्रेग चैपल युग से की तुलना

स्पिनर ने मौजूदा भारतीय ड्रेसिंग रूम की तुलना ग्रेग चैपल के दौर के ड्रेसिंग रूम से की और कहा कि उन्होंने इस तरह की अंदरूनी लड़ाई पहले भी देखी है। उन्होंने कहा कि घर की बात है। इसे आपस में बैठकर सुलझायें।हरभजन ने कहा कि गौतम गंभीर नये हैं। उन्हें खिलाड़ियों को समझना होगा। खिलाड़ियों को उन्हें जानना होगा। बिना केमिस्ट्री के यह काम नहीं करेगा। मैंने यह पहले भी देखा है। 2006- 08 के दौर में जब ग्रेग चैपल कोच थे, मैंने देखा कि पूरा ड्रेसिंग रूम बिखर गया था। इसका कारण यह था कि खिलाड़ियों ने दोषारोपण का खेल खेलना शुरू कर दिया था। मीडिया को इतनी सारी बातें कैसे पता चल गयी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक संपादक दिव्या श्रीवास्तव गोल्डन लाइन प्रेस 510/115, न्यू हैदराबाद, फूलवाला पार्क, लखनऊ, उत्तर प्रदेश से प्रकाशित होता है। कार्यालय पता- 1288/89 अंसल आंगन आशियाना, लखनऊ। ई मेल-sanjaysrivastava.ss26@gmail.com, मोबाइल नंबर-8317011531, सभी प्रकाशित लेख की जिम्मेदारी संबंधित संवाददाता की होगी। किसी भी लेख से स्वामी, मुद्रक, संपादक से कोई मतलब नहीं होगा। पीआरबी एक्ट के तहत इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवम संपादन हेतु उत्तरदाई तथा इनसे उत्पन्न समस्त विवाद लखनऊ के अधीन होंगे। RNI No. UPHIN/2014/58463

डीजिटल महाकुंभ : एक योगी की आधुनिक सोच

200 देशों की 'डिजिटल डुबकी'

विश्व भर में महाकुंभ की 'महागूंज'

नवेद शिकोह

लखनऊ। एक योगी की आधुनिक सोच ने दुनिया के सबसे पुरातन सनातन धर्म की आस्था, सांस्कृतिक, राष्ट्रवाद, हिन्दुत्व की एकजुटता और आध्यात्मिक शक्ति को विश्व पटल पर चमका दिया है। डिजिटल महाकुंभ कई दिनों से हैश टैग टॉप ट्रेंड का रिकार्ड क़ायम कर रहा है। विश्व भर के इंटरनेट यूजर सनातन आस्था के इस महा आयोजन से सीधे जुड़ रहे हैं। देख रहे हैं, आकर्षित हो रहे हैं और नित्य अद्भुत जानकारियां प्राप्त कर रहे हैं। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विगत नौ जनवरी को डिजिटल एक्सपीरियंस सेंटर और डिजिटल मीडिया गैलरी का उद्घाटन किया था। इसके बाद से डिजिटल दुनिया, सोशल मीडिया और देश की मुख्यधारा की मीडिया में योगी सरकार के इस दिव्य और भव्य धार्मिक और सांस्कृतिक महा आयोजन की महा धूम दुनिया भर में गूंज रही है। डिजीटल की दुनिया के माध्यम से विश्व भर में महाकुंभ 2025 को जन-जन तक पहुंचाने का काम मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नगीने सूचना निदेशक शिशिर सिंह और मृत्युंजय कुमार और उनकी टीम ने कर दिखाया है।

प्रयागराज के 10 हजार एकड़ क्षेत्र से आगे बढ़कर महाकुंभ दुनिया भर में आकार ले चुका है। भारत की आध्यात्मिक शक्ति और सांस्कृतिक चेतना को डिजिटल महाकुंभ ने दुनिया के कोने-कोने में फैला दिया है। ये दिव्य और भव्य विशाल अनुष्ठान विश्व भर को आकर्षित कर रहा है। हमारी आस्था, साधना और पुरातन संस्कृति की हर तरफ चर्चा है। डिजिटल दुनिया में महाकुंभ की महा गूंज है। यूरोपीय, एशियन, मिडिल ईस्ट और यहां तक खाड़ी देशों में आस्था के महाकुंभ की तस्वीरों और जानकारियों को सर्च करने की रफ्तार बढ़ रही है। विभिन्न वेबसाइट, पोर्टल, यू-ट्यूब पर इन दिनों सबसे अधिक सर्चिंग महाकुंभ की हो रही है। सोशल मीडिया पर इसकी धूम है। व्हाट्स से लेकर फेसबुक, एक्स, इंस्टाग्राम हर भारत की आस्था, साधू- संत, नागाओं और अखाड़ों का जिक्र है। महाशक्तिमान साधू- संतों और नागा साधुओं की साधना की जानकारियां विदेशियों के आकर्षण का विषय बनी हैं। महाकुंभ की आधिकारिक वेबसाइट पर सबसे अधिक जानकारियां उपलब्ध हैं।

आधुनिक दौर में पुरातन संस्कृति की चेतना को

डिजिटल बनाने की मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की परिकल्पना को सूचना निदेशक शिशिर ने बखूबी आकार दिया है। मुख्यमंत्री के दिशा-निर्देशों को जमीन पर उतारने में योगी के कर्मठ और परिश्रमी अफसरों में शामिल सूचना निदेशक ने महाकुम्भ को सफल डिजिटल महाकुंभ बनाने में जी- जान लगा दी है। जिसका सुखद परिणाम अब वैश्विक स्तर पर दिखायी देने लगा है। देश मे ही नहीं, दुनिया की डिजिटल दुनिया में डिजिटल महाकुंभ छाता जा रहा है। अयोध्या, काशी, मथुरा के बाद आस्था के महाकुंभ ने प्रयागराज का भी कायाकल्प कर दिया है। धार्मिक तीर्थ स्थानों ने विदेशी पर्यटकों की संख्या का ग्राफ दिनों- दिन बढ़ता जा रहा है। कुंभ में भारी संख्या में विदेशी सैलानियों की संख्या बढ़ती जा रही है। डिजिटल दायरा बढ़ने के बाद 200 से अधिक देशों के करोड़ों लोग सर्चिंग के जरिये इस अनुष्ठान में सम्मिलित हुये हैं। भारत के इस आध्यात्मिक-सांस्कृतिक आयोजन के प्रति वैश्विक स्तर पर दुनिया की जिज्ञासा बढ़ने का कारण महाकुंभ का डिजिटाइजेशन है।

पूरी संभावना है कि 144 वर्षो के बाद एक सुंदर संयोग वाले महाकुंभ में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज की पावन धरती पर 40 करोड़ से अधिक श्रद्धालुओं का समागम विश्व में एक रिकार्ड बनायेगा। इससे भी बड़ी उपलब्धि ये है कि विश्व कल्याण की कामना करने वाला ये अनुष्ठान डिजिटल महाकुंभ थोड़े से समय में ही पूरे विश्व में अपनी आध्यात्मिक शक्ति फैलाने लगा है। सनातन धर्म की पुरातन संस्कृति और आस्था दुनिया वालों को सीख दे रही है। इतनी बड़ी संख्या की सुरक्षा का मॉडल सैकड़ों देशों का स्टडी प्वाइंट बन गया है। ये आयोजन कम्युनिकेशन और अनेकता में एकता की मिसाल बन कर पेश हो रहा है। गंगा, यमुना, सरस्वती का संगम किस तरह सनातनी संपूर्ण शक्तियों को अपने बाहों में समेट सकता है। हर जाति, प्रत्येक सम्प्रदाय और पंथ का अटूट गुलदस्ता हिन्दुत्व को महाशक्ति बना रहा है। हमारे सांस्कृतिक राष्ट्रवाद का दर्पण बनकर महाकुंभ देश के आर्थिक विकास, पर्यटन, व्यापार और स्वरोजगार की उन्नति, प्रगति और समृद्धि का मार्ग प्रशस्त कर रहा है। ये भी देखने लायक है कि महाकुंभ की आस्था के रूप में भारत की आध्यात्मिक शक्ति किस तरह प्रासंगिक है और विकास का मार्ग प्रशस्त कर रही है। डिजिटल महाकुंभ के जरिये दुनिया हमारी इन खूबियों को पल- पल निहार रही है, सीख रही है, प्रेरणा ले रही है। आस्था के इस अनुष्ठान से सैकड़ों देश भारत के प्रति आस्थावान हो रहे हैं। अयोध्या और काशी के बाद प्रयागराज का भी कायाकल्प हो गया है।

देश को गौरवान्वित करने वाले इस भव्य और दिव्य आयोजन में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के साथ उनके अफसरों को बड़ा श्रेय जाता है। मुख्य सचिव हों प्रमुख सचिव- गृह, सूचना, डीजीपी, निदेशक सूचना, मुख्यमंत्री के सलाहकार या अन्य हजारों कर्मचारी, हर किसी में आस्था के मनोभाव से अद्भुत शक्तियों और क्षमताओं का समावेश इस ऐतिहासिक अनुष्ठान को सफल बना रहा है। सुरक्षाकर्मी और सरकारी कर्मचारी व्यवस्थाओं और सुरक्षा को अधिक से अधिक बेहतर बनाने में लगे हैं। अफसर और कर्मचारी दिनों रात मेहनत में जुटे हैं। ड्यूटी के कर्तव्य के साथ आस्था ने जैसे इन्हें अतिरिक्त ईश्वरीय वरदान की शक्ति प्रदान कर दी हो।

सैकड़ों एकड़ में फैले इस आयोजन का मीडिया सेंटर भी भव्य है। यहां ना सिर्फ उत्तर प्रदेश या देश की मीडिया बल्कि विश्व भर की मीडिया डेरा डाले है। इस विश्व विख्यात अनुष्ठान को सफल बनाने वाले कर्मचारी महाकुंभ में अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हुये अपनी ड्यूटी की आस्था में डुबकी लगा रहा है। धर्म कर्तव्य पालन का आदेश देता है। ऐसे लोग अनमोल हैं जो अपनी ड्यूटी का कर्तव्य पालन कर्मठता और पूरी ईमानदारी से करते ही हैं साथ इनमें धार्मिक आस्था के प्रति समर्पण की शक्ति है। कर्त्तव्य परायणता और धार्मिक आस्था का मिलन ऐसी महाशक्ति ईश्वरीय चमत्कार जैसी होती है। जो बड़ी से बड़ी चुनौतियों का सामना करने में सफ्ल होती हैं।

हजारों वर्षों पुरानी सनातनी परंपराओं का महाकुंभ हो या सैकड़ों वर्षो की प्रतीक्षा के बाद अयोध्या में श्री राम लला की प्राण प्रतिष्ठा का भव्य और दिव्य आयोजन हो, या कोरोना जैसी प्राकृतिक आपदा से लड़ने और बचने की चुनौतियां हों। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की आध्यात्मिक शक्ति और उनके आलाधिकारियों की कर्तव्य निष्ठा व धार्मिक आस्था की शक्तियों ने हर चुनौती को आसान बना दिया है।

डिजिटल महाकुंभ के यूजर अपनी- अपनी प्रतिक्रियाओं में योगी आदित्यनाथ की प्रशंसा करते हुये लिख रहे हैं कि ये आयोजन सनातनियों को जातियों में बांटने वालों को जवाब दे रहा है कि हिन्दुत्व के गुलदस्ते में हर जाति, सम्प्रदाय और पंथ एकजुट है। इसे कोई भी सियासी ताकत सनातनियों को बांट नहीं सकती, तोड़ नहीं सकती और बिखरा नहीं सकती। आस्था के महाकुंभ को सोशल मीडिया पर प्रबंधन और कानून व्यवस्था का दुनिया का सबसे बड़ा मॉडल भी बताया जा रहा है।